ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

माघ २०७९ फरवरी २०२३

श्री अष्ठाना जी का
सहस्र चन्द्र दर्शन

₹ ३०

विज्ञान दिवस

देवपुत्र के प्रधान संपादक श्री कृष्ण कुमार अष्ठाना जी का सहस्र चंद्र दर्शन समारोह

इन्दौर। दिनांक ३० दिसम्बर २०२२ को देवपुत्र के प्रधान संपादक श्री कृष्णकुमार जी अष्ठाना के सहस्रचंद्र दर्शन समारोह का भव्य आयोजन स्थानीय मधुर मिलन गार्डन में सम्पन्न हुआ।

समारोह में महामंडलेश्वर स्वामी भास्करानंद जी महाराज (वृंदावन) एवं उनकी सुशिष्या स्वामी कृष्णानंद जी का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्व सरकार्यवाह एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य मा. सुरेश जी जोशी उपाख्य भैया जी की अत्यंत महत्वपूर्ण उपस्थिति एवं मार्गदर्शन से समारोह को गरिमा प्राप्त हुई। इस अवसर पर क्षेत्र संघचालक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ श्री अशोक जी सोहनी एवं नगर की आध्यात्मिक विभूतियों में श्री तराणेकर जी महाराज, श्री अण्णा महाराज, श्री अमृतफले महाराज एवं श्री दादू महाराज की गरिमामय उपस्थिति भी मंच को प्राप्त हुई।

इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के १५ वरिष्ठ स्वयंसेवकों का भी सम्मान किया गया। श्री अष्ठाना को शॉल, श्रीफल, पुष्पमाला एवं मान पत्र द्वारा अभिनंदित किया गया। श्री कृष्ण कुमार अष्ठाना पर निर्मित लघु वृत्तचित्र का भी प्रदर्शन किया गया।

सरस्वती बाल कल्याण न्यास द्वारा प्रदत्त मान पत्र का लेखन, वाचन न्यास के अध्यक्ष डॉ. कमल किशोर जी चितलांग्या व आभार प्रदर्शन श्री जी. डी. अग्रवाल ने किया। कार्यक्रम का प्रभावी संचालन डॉ. विकास दवे ने किया। समारोह में अनेक संस्थाओं के वरिष्ठ नागरिक बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

(चित्र में अभिनंदन पत्र भेंट करते हुए क्रमश: सर्वश्री बी.पी. मिश्रा, जी.डी. अग्रवाल, बाबा साहब नवाथे, रमेश गुप्ता, अशोक सोहनी, भैयाजी जोशी, स्वामी भास्करानंद जी उत्सवमूर्ति श्री अष्ठाना जी के बाएँ सर्वश्री विनोद गुप्ता, सी.ए. राकेश भावसार, डॉ. कमलकिशोर चितलांग्या)

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

माघ २०७९ ▪ वर्ष ४३
फरवरी २०२३ ▪ अंक ०८

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फड़के

मानद संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	३० रुपये
वार्षिक	:	२०० रुपये
पन्द्रहवर्षीय	:	२००० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१५० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

एक सत्य घटना बताता हूँ। गुरुकुल में दीक्षांत पूर्व परीक्षा थी। गुरुजी ने आम, चंपे का फूल, कमल का पत्ता, ताम्बे का बर्तन सामने रखे थे और एक गाय भी बांध रखी थी। प्रश्न था 'इन सबमें क्या समानता है?' अब फूल, फल, पत्ते, बर्तन और प्राणी में भला क्या समानता ढूँढी जाए? रंग, रूप, आकार भिन्न-भिन्न, कोई जीवित कोई निर्जीव, कोई मानव निर्मित कोई प्राकृतिक, सभी विद्यार्थी सोच में पड़ गए। केवल एक विद्यार्थी 'कणाद' ने कहा ''गुरुजी! इनमें एक ही समानता है कि ये सब परमाणु से बने हैं।'' बालक उत्तीर्ण हुआ और आगे चलकर महान परमाणुवाद प्रवर्तक **वैज्ञानिक ऋषि कणाद** बना।

अब इससे लगभग दो-ढ़ाई हजार वर्ष बाद की घटना बताता हूँ। एक समुद्री यात्रा में जब शेष यात्री समुद्र के नीले पानी का आनंद ले रहे थे एक युवक इस सोच में डूबा था कि ''रंगहीन होने वाला पानी नीला क्यों दिखाई दे रहा है।'' उसके मस्तिष्क में एक बार पहले भी ऐसा अलग प्रकार का ही प्रश्न कौंधा था जब अलग-अलग संगीत वाद्यों की ध्वनियों पर मुग्ध होने की बजाय वह 'ये ध्वनियाँ भिन्न-भिन्न क्यों है' यह सोच रहा था। बाद में उसने इनके वैज्ञानिक कारण खोजे, सिद्धांत बनाए और दुनिया में नोबल पुरस्कार विजेता महान भौतिक वैज्ञानिक के रूप में प्रसिद्ध होकर भारतमाता का मान बढ़ाया, नाम था **प्रो. चन्द्रशेखर वैंकट रामन**। 'रामन प्रभाव' के नाम से उनकी प्रकाश प्रकीर्णन की खोज पर २८ फरवरी १९२८ को उन्हें नोबल पुरस्कार मिला था। बाद में यह दिन **'विज्ञान दिवस'** कहलाने लगा।

बच्चो! शेष चेतनाओं के साथ ही वैज्ञानिक चेतना भी हम सबमें होती ही है। जब कोई बच्चा खिलौने से खेलते-खेलते उसे उलट-पुलटकर, छूकर, चाटकर, और तोड़कर भी, **जो है, वह क्यों है, कैसे है?** जानने का प्रयास करता है, यह उसकी अबोधता नहीं वैज्ञानिक चेतना का ही प्रकटी करण है। यह बात अलग है कि हर ऐसा बच्चा बड़ा होकर वैज्ञानिक नहीं बनता क्योंकि उसकी यह चेतना मंद पड़ जाती है।

बच्चो! वर्तमान 'विज्ञान युग' में अपनी वैज्ञानिक चेतना से विविध क्षेत्रों में हम भारत माता की श्रेष्ठ सेवा कर सकते हैं। इसलिए वैज्ञानिक चेतना जाग्रत रखिए।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

।। अनुक्रमणिका ।।

कहानी

- मटकू का जन्मदिन -पवन कुमार वर्मा २४
- नीतू की शरारत -डॉ. के. रानी ३०
- चन्द्रलोक की थुलथुलपरी -डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' ३६

छोटी कहानी

- समुद्री पेयजल -शिखरचन्द जैन ०५
- छुट्टी भी आवश्यक है -रोचिका अरुण शर्मा ०७
- जुगनू क्यों चमकते हैं -ज्ञान प्रकाश 'पीयूष' ०९
- सुनहरा फूल -पूर्ति वैभव खरे ४७

लघुकथा

- पुण्य या पाप -राजीव नामदेव 'राना लिधौरी' २९

आलेख

- कहानी माचिस की -दिनेश प्रताप सिंह 'चित्रेश' ५०

चित्रकथा

- विचित्र यात्रा -संकेत गोस्वामी ०८
- नंदू की चिड़िया -देवांशु वत्स २९

प्रसंग

- वासुदेव बलवंत फडके -ललितनारायण उपाध्याय २३
- युवा आजाद की ईमानदारी -सांवलाराम नामा ३९

कविता

- तितली रानी -नमिता वैश्य ०६
- फिसलन पट्टी -शादाब आलम २८
- जमुहाई -भगवती प्रसाद द्विवेदी ३५
- अम्मा तुम भूगोल बताओ -आशीष मोहन ४८

स्तंभ

- राजकीय मछलियाँ -डॉ. परशुराम शुक्ल १०
- बालसाहित्य की धरोहर -डॉ.नागेश पाण्डेय 'संजय' ११
- शिशु महाभारत -मोहनलाल जोशी २०
- गोपाल का कमाल -तपेश भौमिक २१
- मौके पर सूझबूझ -रजनीकांत शुक्ल २६
- पुस्तक परिचय - २८
- अशोक चक्र : साहस का सम्मान - ३२
- शिशु गीत -डॉ. जयप्रकाश भारती ३३
- आपकी पाती - ३३
- थोड़ी थोड़ी डॉक्टरी -डॉ. मनोहर भण्डारी ३४
- छः अंगुल मुस्कान - ३९
- विज्ञान व्यंग्य -संकेत गोस्वामी ४९
- विस्मयकारी भारत -रवि लायटू ५१

बौद्धिक क्रीडा

- बढ़ता क्रम -देवांशु वत्स ०८
- पुष्प पहेली -राजेश गुजर २९

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - "**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**" आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

समुद्री पेयजल

– शिखरचंद जैन

श्रीकांत और ध्वनि, भाई–बहन दोनों को तेज गति से चलते हुए क्रूज में बैठे हुए, खिड़की से झाँकने में बड़ा आनंद आ रहा था। दोनों माँ–पिताजी के साथ मुंबई से गोवा घूमने जा रहे थे। तभी ध्वनि को प्यास लगी। उसने श्रीकांत से कहा– ''भाई! तेरे थैले में पानी की बोतल है न? दे जरा प्यास लगी है।''

श्रीकांत ने हँसते हुए कहा– ''कितना पानी तो है चारों ओर, पी ले अँजुरी भर के।''

ध्वनि ने मुस्कुराते हुए कहा– ''तुमने सुना नहीं क्या, अँग्रेजी कविता की पँक्तियाँ बहुत चर्चित हैं। 'वॉटर वॉटर एवरीव्हेयर नॉट ए ड्रॉप टू ड्रिंक।' इसी तरह हिंदी में भी एक कहावत है, 'समुद्र में रहकर भी मनुष्य प्यासा रह जाता है।''

''सही कहा तुमने। समुद्र का पानी खारा होता है, इससे तो नहाना भी कठिन है, पीने की तो बात ही दूर है।'' श्रीकांत ने बहन की बात से सहमति जताते हुए कहा।

ध्वनि ने कहा– ''लेकिन भाई! ग्लोबल वार्मिंग के कारण केवल हमारे देश में ही नहीं विश्व के कई देशों में अब पेयजल की कमी अनुभव की जाने लगी है। जबकि पृथ्वी का ७० प्रतिशत भाग पानी से घिरा हुआ है। हमारे समुद्रों में अथाह जलराशि है। इसका लाभ उठाने के लिए कुछ करना चाहिए।''

श्रीकांत ने ठंडी हवा के झोंके का आनन्द उठाते हुए कहा– ''ध्वनि! तुम चिंता मत करो। दुनिया के कई वैज्ञानिक इन दिनों समुद्री पानी को पीने लायक बनाने में जुटे हुए हैं। हाल ही जर्नल एनवायरमेंटल एंड टेक्नोलॉजी में प्रकाशित एक शोध की रिपोर्ट में बताया गया है कि मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के वैज्ञानिकों ने समुद्री पानी से हानिकारक, विषैले तत्वों व नमक को हटाकर पीने लायक बनाने वाली एक पोर्टेबल डीसैलाइनेशन मशीन (विलवणीकरण यंत्र) बना ली है।''

''अच्छा? ये तो काफी बड़ी और ऊर्जा खपाने वाली मशीन होगी फिर?'' ध्वनि ने उत्सुकतापूर्वक पूछ लिया।

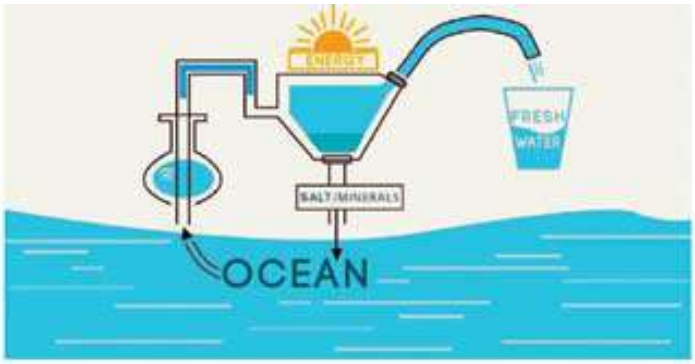

श्रीकांत ने कहा– ''नहीं–नहीं, सूटकेस के आकार के इस उपकरण का वजन लगभग १० किलो ग्राम है। इसे मोबाइल चार्ज करने जितनी ऊर्जा से संचालित किया जा सकता है या फिर सोलर पैनल से भी चलाया जा सकता है। मात्र एक बटन दबाने से यह डिवाइस अपना काम शुरू कर देता है और समुद्री पानी को परिष्कृत करके विश्व स्वास्थ्य संगठन के मापदंडों के अनुसार पेयजल बना देता है।''

''अरे! यह तो कमाल की मशीन है। फिर तो हम जैसे पर्यटक ऐसी मशीन लेकर लंबी समुद्र यात्रा पर निकल सकते हैं। फिर तो तुमने यह भी पढ़ा होगा कि इसमें कौन–सी तकनीक का उपयोग किया जाएगा।'' ध्वनि प्रसन्नता से उछल पड़ी थी।

श्रीकांत ने कहा– ''हाँ हाँ! इस उपकरण में शोधकर्ताओं ने आईपीसी यानी आयरन कंसंट्रेशन पोलराइजेशन तकनीक का उपयोग किया है। इससे कम ऊर्जा खर्च करके पानी का कचरा साफ किया जा सकता है। यह तकनीक फुलप्रुफ नहीं है इसलिए कभी–कभी नमक की कुछ मात्रा पानी में रह जाती है। इस कमी को दूर करने के लिए इलेक्ट्रोडशयलिसिस नामक दूसरा प्रोसेस भी किया गया है। इस प्रोसेस के बाद पानी पूरी तरह शुद्ध पेयजय बन जाता है। इसका लाइव टेस्ट बोस्टन के कंसर्न बिच पर किया गया जहाँ इस मशीन ने आधे घंटे में एक कप पेयजल बना दिया।'' ''भाई! ये तो बहुत धीमी गति है। इसे कौन उपयोग करेगा?'' ध्वनि ने निराश होते हुए कहा।

श्रीकांत ने समझाते हुए कहा– ''अरे! मेरी बहन। अभी तो इसे प्रायोगिक तौर पर तैयार किया गया है इसलिए इस डिवाइस की गति धीमी है। लेकिन धीरे–धीरे जब इसको इंप्रूव करके कमर्शियल प्रयोग के लिए तैयार किया जाएगा तो गति काफी तेज हो जाएगी।''

''हम्मम... फिर ठीक है।'' ध्वनि ने संतुष्ट होकर कहा और पानी पीते हुए फिर से अठखेलियाँ करती हुई लहरों का आनन्द लेने लगी।

– कोलकाता (प. बंगाल)

कविता

तितली रानी

– नमिता वैश्य

तितली रानी, तितली रानी,
करती हो कितनी मनमानी।
कितने सुन्दर रंग तुम्हारे,
इन्द्रधनुष से लगते प्यारे।
रंग–बिरंगे पंख हैं न्यारे,
जैसे जड़े हुए हो तारे।
फूल–फूल पर जाती हो,
सबके मन को भाती हो।
कितनी कोमल, कितनी चंचल,
आँखों से हो जाती ओझल।
दूर–दूर तक उड़ती फिरती,
मेंहनत से तुम कभी न डरती।

– मसकनवा, गोण्डा (उ. प्र.)

छुट्टी भी आवश्यक है

– रोचिका अरुण शर्मा

मोनू खेलते समय बरसात में भीग गया था। अगले दिन जब वह शाला पहुँचा तो छींक रहा था ''आं छीं आं छूं''। छुट्टी हुई तब तक उसकी नाक बहने लगी थी। वह बार-बार अपनी नाक पोंछता जिससे सामने से नाक लाल भी हो गयी थी। सभी बच्चे उसे रेंडियर कहकर पुकारने लगे। रीना तो गाना भी गाने लगी ''रुडेल्फ द रेनोज रेंडियर''।

मोनू अनमना-सा हो गया था। जब अध्यापिका ने रीना व उसके साथियों को मोनू को चिढ़ाते हुए देखा तो सबको जोरदार डाँट पड़ी। अगले दिन असेम्बली के बाद जब सभी विद्यार्थी कक्षा में जा रहे थे मोनू को जोर से छींक आई और तभी अमित ने उसकी नकल करते हुए कहा ''आँ छूं।''

मोनू समझ गया था कि वह उसे चिढ़ाकर ऐसा कर रहा है सो वह रूआँसा-सा हो गया था। क्या करे सर्दी से बुरा हाल नाक-गले और सिर में दर्द भी होने लगा था। पूरे दिन शाला में वह अलसाया सा रहा।

अध्यापिका ने जब उसका यह हाल देखा तो कहा- ''मोनू आज तुम्हें शाला से छुट्टी कर लेनी चाहिए थी, बिना कारण तुम पूरे दिन परेशान रहे।''

''पर अध्यापिका जी यदि मैं शाला न आऊँ तो मैं तो पढ़ाई में पीछे रह जाऊँगा न ? मेरा कक्षा कार्य व गृहकार्य भी अधूरा रह जाएगा। फिर अधिक काम बढ़ जाएगा और मुझे पूरा करना होगा।''

''हम्म्म! बात तो तुम्हारी सही है किन्तु यदि हमारा स्वास्थ्य ठीक न हो तो हमें दूसरे कार्यों को एक ओर छोड़ अपने स्वास्थ्य का पहले ध्यान रखना चाहिए। पढ़ाई-लिखाई और अन्य कार्य तो सारे जीवनभर ही लगे रहेंगे वो कहते हैं न 'हेल्थ इज वेल्थ'।

फिर दूसरी समस्या यह है कि जब एक छात्र को सर्दी-जुकाम हुआ हो तो उससे यह दूसरे छात्रों को भी लग जाता है।''

''हम्म्म!'' मोनू बोला- ''अब मैं समझ गया, पर मैं कल विद्यालय नहीं आऊँगा तो आप मुझे बाद में पाठ पढ़ा देंगी न? क्योंकि मेरे माँ-पिताजी तो कार्यालय जाते हैं और दादी माँ को तो पढ़ाना नहीं आता बस वे मुझे अच्छी-अच्छी कहानियाँ सुनाती हैं। चटपटे पकौड़े, समोसा, पूरी आदि मजेदार व्यंजन बनाकर खिलाती हैं।''

''हाँ-हाँ, क्यों नहीं मैं तुम्हारी पूरी सहायता करूँगी। और तुम्हारा गृहकार्य करने में भी दूसरे विद्यार्थी तुम्हारी सहायता करेंगे।'' अगले दो दिन मोनू शाला नहीं आया। कक्षा के सभी विद्यार्थियों को अच्छा नहीं लग रहा था क्योंकि वे सर्दी से परेशान मोनू को चिढ़ा रहे थे और उसकी छींकों का मजाक बना रहे थे, ऊपर से उसकी मजबूरी।

दो दिन बाद जब मोनू पूर्ण रूप से स्वस्थ होकर शाला आया तो सभी छात्र उसे देखकर बहुत प्रसन्न हुए। उसे बहुत धन्यवाद किया कि उसने सर्दी को कक्षा के अन्य विद्यार्थियों तक फैलने नहीं दिया। रीना ने उससे क्षमा माँगते हुए कहा- ''अब मैं तुम्हें रेंडियर नहीं पुकारूँगी और तुम्हारा गृहकार्य करने में तुम्हारी सहायता भी करूँगी।''

बाकी छात्र भी बोल पड़े- ''सर्दी को बाय-बाय, मोनू रोज शाला आये।''

''हाँ! मोनू तुम बहुत लगन वाले हो, अब तुम कभी बीमार न होना और प्रतिदिन शाला आओ हम सब मिलकर पढ़ाई करेंगे।'' अध्यापिका ने कहा।

- चेन्नई (तमिलनाडु)

बढ़ता क्रम 16

देवांशु वत्स

1. किसी को बुलाना।
2. अपना, निजी, स्वकीय।
3. घर, मकान, खजाना।
4. सोच-विचार, हिचक।
5. अनैतिक।
6. जान बूझ कर विपत्ति मोल लेना।

1. आ					
2. आ					
3. ओ					
4. आ					
5. आ					
6. आ					

उत्तर: 1. आ, 2. आत्म, 3. आगार, 4. आगा-पीछा, 5. आचारहीन, 6. आग में कूदना।

जुगनू क्यों चमकते हैं?

– ज्ञानप्रकाश 'पीयूष'

प्रज्ञा बड़ी जिज्ञासु किस्म की लड़की है। वह बड़ी चंचल, नटखट व दुबले–पतले शरीर की तेजस्वी बालिका है। घर पर अपने माँ–पिताजी से तथा शाला में अपनी शिक्षिका से रोज नए–नए प्रश्न पूछती है। पता नहीं, उसके दिमाग में इतने सारे प्रश्न कहाँ से आते हैं? वह स्वयं भी इस बात से हैरान है।

एक दिन कक्षा में उसने अपनी विज्ञान शिक्षिका से पूछा– ''दीदी! जुगनू चमकते क्यों हैं?''

शिक्षिका को आश्चर्य नहीं हुआ। क्योंकि प्रज्ञा रोज नए–नए प्रश्न पूछा करती है। पर आज तो उसने बहुत अच्छा और गम्भीर प्रश्न पूछा है।

शिक्षिका ने कक्षा की समस्त बालिकाओं को संबोधित करते हुए कहा– ''इस प्रश्न का उत्तर तुममें से कोई बालिका जानती हो तो अपना हाथ खड़ा करे?''

कक्षा में मौन छा गया। किसी भी छात्रा ने

अपना हाथ खड़ा नहीं किया।

फिर शिक्षिका ने बालिकाओं को कहा– ''आपने रात के समय जुगनुओं को चमकते हुए तो देखा ही होगा। जुगनुओं को चमकने के पीछे इसका उद्देश्य अपने साथी को आकर्षित करना और अपने लिए भोजन की तलाश करना है।'' सभी बालिकाएँ उनकी बात बड़े ध्यान से सुनने लगीं।

अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए वे बोलीं– ''मैं तुम सबको इसके इतिहास के बारे में विस्तार से बताती हूँ। ध्यान से सुनो।''

''चमकने वाले जुगनू नामक इस कीट की खोज १६६७ में वैज्ञानिक रॉबर्ट बायल ने की थी। पहले यह माना जाता था कि जुगनुओं के शरीर में फास्फोरस होता है, जिसके कारण से यह चमकते हैं, परन्तु इटली के वैज्ञानिकों ने सिद्ध किया कि जुगनू की चमक फास्फोरस से नहीं, अपितु ल्युसिफेरेस नामक प्रोटीनों के कारण होती है।

जुगनू की चमक रंग हारा, पीला, लाल आदि कई प्रकार का होता है। ये अधिकांशत: रात में ही चमकते हैं। दिखने में ये एकदम पतले और दो पंख वाले होते हैं। ये जंगलों में पेड़ों की छाल में अपने अंडे देते हैं।

जुगनू की तरह ही चमकने वाले ऐसे कई जीव हैं। जुगनू की तरह ही रोशनी देने वाले जीवों की एक हजार प्रजातियों की खोज हो चुकी है, जिनमें से कुछ प्रजातियाँ पृथ्वी के ऊपर और समुद्र की गहराइयों में पाई जाती हैं। और दक्षिणी अमेरिका में प्रचुरता से पाए जाते हैं।''

सभी बालिकाओं ने अपनी शिक्षिका की बात को बड़े मनोयोग से सुना। प्रज्ञा ने उनका हार्दिक धन्यवाद किया तथा कहा कि जुगनुओं के संबंध में उनके द्वारा दी गई जानकारी से उनके ज्ञान में बहुत वृद्धि हुई है।

– सिरसा (हरियाणा)

राजकीय मछलियाँ

कोर्रा मत्ता

– डॉ. परशुराम शुक्ल, भोपाल (म. प्र.)

भारत से अफ्रीका तक में,
यह मछली मिल जाती।
कीचड़, दलदल, रुके हुए जल,
में आवास बनाती।।

लेती साँस हवा में आकर,
कभी नहीं घबराती।
और कभी आकर जमीन पर,
साँपों–सा लहराती।।

साँपों जैसे मुँह फैलाती,
साँपों जैसी काया।
मीटर भर की इस मछली ने,
सब पर रोब जमाया।।

यह खूँखार शिकारी मछली,
छोटी मछली खाती।
मिल जाये यदि साँप उसे भी,
फौरन चट कर जाती।।

मादा, नर के साथ हमेशा,
अपने अंडे सेती।
शत्रु देखते ही दौड़ाकर
दूर उसे कर देती।।

– भोपाल (म. प्र.)

बाल विज्ञान लेखन के पर्याय : शुकदेव प्रसाद

प्रस्तोता – डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय'

प्यारे बच्चो!

जीवन में सफलता के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण का होना अत्यंत आवश्यक है। इस बार हम आपका परिचय विज्ञान लेखन के पर्याय शुकदेव प्रसाद जी (२४.१०.१९५४–२३.०५.२०२२) से कराते हैं। उनका जन्म उत्तर प्रदेश के बस्ती जनपद के गोलहरा गांव में हुआ था। वे छात्र जीवन से ही विज्ञान की गतिविधियों में बढ़ चढ़कर भाग लेते थे। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा बस्ती और उच्च शिक्षा प्रयागराज विश्वविद्यालय में हुई। एम.एस.सी. (वनस्पति), एम. ए. (हिन्दी, अर्थशास्त्र, प्राचीन भारतीय इतिहास) आदि शैक्षिक योग्यताओं से सम्पन्न शुकदेव प्रसाद जी आजन्म अविवाहित रहे। विज्ञान लेखन के क्षेत्र में उन्होंने कीर्तिमान स्थापित किए।

लगभग डेढ़ सौ पुस्तकों के रचनाकार शुकदेव जी ने विज्ञान भारती, विज्ञान वैचारिकी और पर्यावरण दर्शन पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया। वे प्रतियोगिता सम्राट के संस्थापक संपादक थे।

उन्होंने छः खंडों में विज्ञान कथा कोश संपादित किया। भारतीय विज्ञान कथाएँ और विश्व विज्ञान कथाएँ शीर्षक से पुस्तकों की दस–दस सीरीज भी तैयार कीं।

बाल विज्ञान साहित्य के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय योगदान को देखते हुए उन्हें उ. प्र. हिन्दी संस्थान, लखनऊ से जगपति चतुर्वेदी बाल विज्ञान लेखन सम्मान प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त उन्हें एन.सी.ई.आर.टी. का राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार, अंतरिक्ष विभाग, भारत सरकार का विक्रम साराभाई पुरस्कार परमाणु ऊर्जा विभाग, भारत सरकार का डॉ. होमी भाभा पुरस्कार, सोवियत लैंड नेहरू एवार्ड, कौटिल्य पुरस्कार, मेघनाद साहा पुरस्कार इत्यादि अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए। आइए, हम यहाँ उनकी कुछ चर्चित रचनाओं का रसास्वादन करते हैं।

कहानी

रोबो मेरा दोस्त

मित्रो! आज मैं अपने एक मित्र से तुम्हें मिलाऊँगा, जिसके बारे में जानकर तुम्हें आश्चर्य होगा। जैसा कि मुझे भी हुआ था। मित्रो, रोबो से मेरी भेंट संयोगवश ही हुई थी। रोबो, मेरा मित्र, एक ही बार मिला था। फिर भी वह भेंट अविस्मरणीय थी।

यह बहुत पहले की बात है। मैं एक रोज रात में देर तक जागता रहा। जैसे ही सोने की तैयारी करने लगा, मैंने एक सुरीली–सी मधुर धुन सुनी। सच मानों मुझसे रहा न गया। मैंने खिड़की खोलकर बाहर झाँका। मेरी ही तरह एक लड़का मेरी ओर अपलक निहार रहा था। यही रोबो था। मुझे अपनी ओर देखते ही उसने हाथ से आने का संकेत किया। मेरे ऊपर तो उसके संगीत का जादू हो चुका था। मैं अपने को रोक न सका। क्षणभर में मैंने अपने आपको बगीचे में पाया। रोबो ने मुझसे कहा– ''आओ, आज तुम्हें दूर देश की सैर करायें।'' मैंने पूछा– ''किस देश की?'' रोबो बोला– ''ग्रह–नक्षत्रों की बात तुम अपनी किताबों में पढ़ते हो।''

मैं शायद उसे मना कर देता, पर रोबो की जादुई बातें और सैर सपाटे का आकर्षण मुझ पर ऐसा हावी हुआ कि मैं मना न कर सका। मुझे मेरे बगीचे में खड़े एक तश्तरीनुमा यान में रोबो ने बैठाया और देखते ही देखते मैं उड़ चला। दूर बहुत दूर यान की काँच की दीवार से मैंने साफ-साफ देखा, मैं जैसे सितारों की बस्ती में उड़ान भर रहा हूँ, उनके पास आता जा रहा हूँ, पास और पास। तभी उसका यान धरती जैसी जगह पर रुका। मुझे उसने अपने यान से बाहर उतारा और गाइड की तरह पीछे-पीछे आने को कहा। फिर मैं और वह ऐसी जगह में थे, मानों वह कोई फैक्ट्री हो। उसने पूछा-''कुछ खाओगे?'' थोड़ी देर में प्लेट में हरे-हरे लड्डू हाजिर थे। खाने में भी मजेदार। मैंने पूछा, ''यह कौन-सी चीज के बने हैं?'' रोबो हँसा मेरी नादानी पर ''अरे! यह हैं काई के लड्डू। शैलावों के लड्डू।'' दोस्तो! मैंने तो अपनी किताबों में पढ़ा था कि शैवाल भी खाई जाती है। धरती पर ही कहीं-कहीं लोग खाते हैं। किन्तु आज तो शैवाल के व्यंजन मेरे सामने थे। पानी की जगह शैवालों का हरा-हरा जूस था। मैंने कहा- ''तुम लोगों के बड़े मजे हैं मेरे दोस्त।'' सहज ही मेरे मुँह से दोस्त संबोधन सुनकर रोबो ने मेरी ओर अपना दोस्ती का हाथ बढ़ाया। मैंने उससे हाथ मिलाया। किन्तु यह क्या? मेरे उस प्यारे भोले से दोस्त का हाथ, मेरी तरह मुलायम न था, वह तो लोहे सरीखा कठोर था। मैंने पूछा भी क्या यह नकली हाथ हैं? रोबो ने मायूसी से कहा- ''हाथ ही नहीं, दोस्त मैं पूरा का पूरा नकली हूँ। तब तक उसने अपने हाथों से अपना सीना खोल दिया। अंदर मशीनी पुर्जे। मुझे बड़ी हैरत हुई।

उसने ही बताया ''हम हैं मशीनी मानव यानी रोबोट। प्यार से तुम मुझे रोबो भी कह सकते हो। मैं या मेरी तरह के रोबोट इन्हीं फैक्ट्रियों में बनाये जाते हैं और मेरी आत्मा यानी तमाम सूचनाएँ इन पुर्जों में कोड के रूप में डाल दी जाती है और वैज्ञानिकगण मनचाहा काम हमसे लेते हैं। हम खेती करते हैं। बच्चों को पाठ सिखाते हैं, गणनाएँ करते हैं। क्या नहीं करते, यहाँ तक कि जासूसी भी।... तुम्हारी धरती पर मुझे जासूसी के लिए ही भेजा गया था।'' रोबो ने अपना सारा भेद खोल दिया। तब तक उसके और साथी वहाँ आ चुके थे। उन सभी से उसने मेरा परिचय कराया, ''इनसे मिलो! यह हैं पृथ्वी के वासी ओम शर्मन और ये हैं मिनिएचर ग्रह के मशीनी मानव यानी रोबोट।''

परिचय चल ही रहा था कि रोबो को याद आया- ''आओ! तुम्हें यहाँ के बच्चों से मिलाएँ।'' फिर वह हमें एक कक्ष में ले गया। वहाँ बच्चों को एक रोबोट ही पढ़ा रहा था। मेरे दोस्त रोबो ने मेरी उनसे मुलाकात करायी। वे मेरी बात समझ नहीं सकते थे और न ही मैं उनकी। रोबो ने दुभाषिए का काम किया और बातें होने लगीं। बातें हो ही रही थीं कि एकाएक

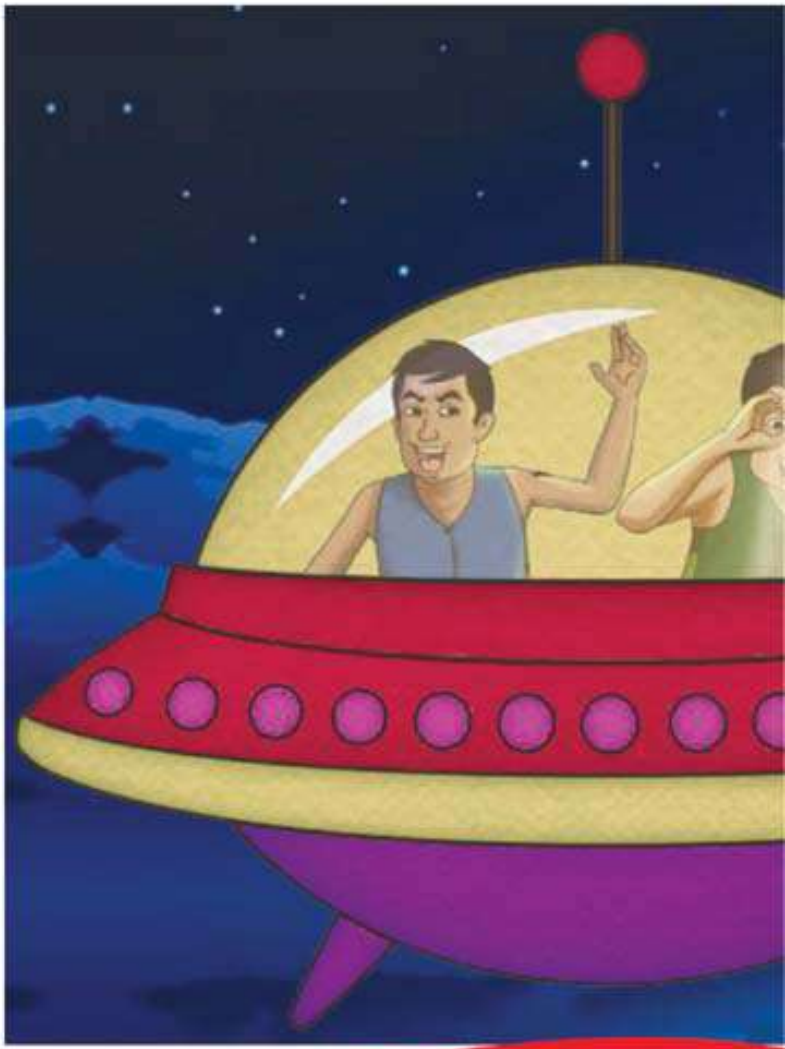

टीचर रोबोट लड़खड़ा कर गिर पड़ा। फिर मेरे दोस्त रोबो ने कक्षा की छुट्टी कर दी और हमें लेकर अपनी कार्यशाला में जा पहुँचा।

टीचर रोबोट की भट्टी में डाल दिया गया। मैं अनमना–सा हो गया। रोबो ने शायद मेरे मन की बात जान ली थी। उसने कहा– ''दोस्त! यूँ मायूस न हो। हम तो बेजान मशीने हैं, भट्टी में तपा देने से भला हमें क्या दुःख होगा? यहाँ तो कायदा है– एक रोबोट बेकार हुआ तो तुरंत उसे गला दिया गया और उसकी जगह पर दूसरा तैनात।'' हमारी बात समाप्त भी न हुई थी कि सामने से हूबहू टीचर रोबोट की तरह का दूसरा रोबोट आता दिखाई पड़ा। उसने मुझसे हाथ मिलाया। मेरे साथ के रोबो ने कहा– ''ये हैं बच्चों के नए टीचर।''

मैंने जानना चाहा– ''आखिर क्यों यहाँ सारा काम रोबोट ही करते हैं, आदमी नहीं?''

रोबो ने जवाब दिया– ''आदमी भी काम करते हैं पर रोबोट तो बेजान मशीनें हैं, वे यानी हम उनके मूक आज्ञापालक हैं, हमें जो काम सौंपा जाता है, करते हैं। हम विरोध नहीं कर सकते, रो नहीं सकते, यहाँ तक घृणा और प्यार भी नहीं कर सकते। इसीलिए यहाँ के आदमियों को हम पर अधिक भरोसा है और एक बात यह भी तो है, जहाँ हम बेकार हुए हमें तुरंत नष्ट कर डाला, न कोई रोना–धोना और न ही कोई रिश्ता।'' फिर मुझे उस जगह रोबो ले गया जहाँ रोबोट तैयार किए जाते हैं। रोबो ने मुझे दिखाया– ''यह देखिए, यहाँ लोहे के हाथ तैयार होते हैं, यहाँ पैर ढाले जाते हैं, यहाँ शक्लें बनायी जाती हैं और यह रहा वह कक्ष जहाँ हममें जान डाली जाती है अर्थात् जिस रोबोट से जैसा काम लेना होता है, उसके सारे अंगों को जोड़कर शारीरिक ढांचा खड़ा करने के बाद उनके अंदरूनी भागों में संकेत भर दिए जाते हैं और देखते ही देखते रोबोट जिंदा हो उठता है यानी काम करने लग जाता है।

रोबोट ने एक बात और बताई, वह यह कि यहाँ का नियंत्रक कक्ष बहुत ही वैज्ञानिक है। कहाँ क्या हो रहा है, उसे उसकी तत्काल सूचना हो जाती है। उसने मुझे याद दिलाया कि अभी–अभी जब टीचर रोबोट बेकार हो गया था, तो उसके स्थान पर दूसरा टीचर नियंत्रण कक्ष के आदेश से ही तैयार किया गया था। कल से उसी प्रकार वह कक्षाएँ लेगा।

मैंने पूछा– ''तुम लोग और क्या कर सकते हो?'' उसने उत्तर दिया– ''कहा न, हर काम जो यहाँ के आदमी हमसे कराना चाहते हैं, हम कविता करते हैं, अनुवाद करते हैं, खेतों में काम करते हैं और अपनी ही तरह के रोबोट भी बनाते हैं।''

मैं बच्चों से और वहाँ के आदमियों से मिलना और बातें करना चाहता था लेकिन उसने कहा कभी फिर सही। उसे न जाने क्या पूछा कि उसने तेजी से मुड़कर मुझसे कहा आओ, इससे पहले कि तुम्हारी

धरती पर सवेरा हो जाए, तुम्हें छोड़ आएँ।

मैं फिर यान में बैठा धरती पर वापस आ रहा था। मुझे उतार कर रोबो ने हाथ मिलाया। मैंने उसके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की और कहा कि फिर मिलेंगे, दोस्त रोबो!

उसने मेरी बात काट कर कहा– ''नहीं, नहीं, ओ–हमारी यही अंतिम मुलाकात है। मेरे ग्रह के अन्य रोबो इस बात पर नाराज हैं कि मैंने अपना भेद क्यों तुम्हें बता दिया? अब शायद ही वे मुझे धरती का पता लगाने को भेजें।''

तब तक अलविदा कहकर रोबो यान में बैठ चुका था। मैंने हवा में हाथ हिलाया। मेरा दोस्त मुझसे दूर होता जा रहा था– दूर बहुत दूर। मैंने धीरे से घर के भीतर कदम रखा तो देखा माँ, पिताजी, मेरा भाई सोम अभी सो रहे थे। मैं चुपचाप बिस्तर में लुढ़क गया। यही सोचता रहा कि मशीनी रोबो भी इतने अच्छे दोस्त हो सकते हैं, हमारी तरह सोच समझ सकते हैं भला? अभी–अभी जो कुछ हुआ था, मैं उसी के बारे में सोचता रहा। मैं चमत्कृत हो उठा था, विज्ञान कहाँ से कहाँ पहुँच गया, कैसे निराले हैं विज्ञान के करिश्मे। मैंने देखा सूरज ने पूरब में झाँका, अपनी लाली बिखेरी और भोर हो गई। उधर भोर हुई और इधर मैं थका–माँदा सोने की तैयारी करने लगा तभी माँ ने प्यार से डाँट पिलाई– ''अरे बेटा! तुम्हें यह क्या हो गया है। आज तू दिन चढ़े तक सो रहा है? तू तो रोज कभी का उठ जाता था?''

भला मैं माँ को क्या बताता, जो कुछ हुआ मैं स्वयं ही नहीं समझ पा रहा था। तब तक मेरा छोटा भाई सोम जाग गया था। मुझसे बोला, ''हाँ दादा! माँ ठीक कहती है, अच्छे लड़के देर तक नहीं सोते।'' मैं उसकी भोली बातों पर रीझ उठा और बिस्तर छोड़ चुका था।

मैंने आज तक अपने उस अजीब दोस्त 'मशीनी मानव' के बारे में किसी से भी उल्लेख नहीं किया। उससे मैं क्या–क्या अभी पूछने वाला था किन्तु क्या जानता था कि यह मुलाकात अधूरी रहेगी। मेरा दोस्त रोबो फिर नहीं आया मुझसे मिलने। हालांकि मैं हर रोज रातभर जागकर उस सुरीली जादुई आवाज को सुनने को हमेशा उत्सुक रहता हूँ। शायद कभी तो लौटे मेरा दोस्त। दोस्तो! सच मानो, कभी रोबो से फिर भेंट हुई तो उसके बारे में आपको अवश्य बताऊँगा।

जानकारी

पेड़ों पर लटकने वाला जंतु : पेंगोलिन

अफ्रीका में पेंगालिन नाम जंतु पेड़ों पर लटकते पाया जाता है। यह भी पूँछ लपेटकर लटका रहता है। जब कभी यह संकट में फंसता है, तो सारा शरीर गेंद की शक्ल में लपेट लेता है और भूमि पर कूद पड़ता है और इस प्रकार शत्रुओं से अपनी रक्षा करता है। वृक्ष की शाखाओं पर लटके–लटके ही अपनी लंबी जीभ से यह अपना आहार प्राप्त कर लेता है। यह चींटियों तथा दीमकों के घोसले खोल डालता है तथा उनके अंडे–झिल्लियों को खा जाता है। इसी नाते इसे चींटीखोर (ऐंट–ईटर) भी कहते हैं। पेंगोलिन के पूँछ

की मांसपेशियाँ बड़ी शक्तिशाली होती हैं। यह लटके रहते हुए भी अपना सारा शरीर ऊपर उठा लेता है।

प्रकृति की प्रयोगशाला में स्लॉथ ओपोसम, पेंगोलिन ऐसी विशिष्टताएँ लेकर पैदा हुए हैं जो उन्हें आकर्षण का केंद्र बनाती हैं। अपनी विचित्रताओं के कारण ये सारी दुनिया में मशहूर है मगर इन्हें पालतू बनाना बड़ा मुश्किल है। बंदी अवस्था में पेंगोलिन भोजन तक लेना गवारा नहीं करता।

जानकारी

लामा : बिना कूबड़ का ऊँट

आज हम आपका परिचय ऐसे ऊँट से कराएँगे, जिसके कूबड़ होता ही नहीं। दक्षिणी अमेरिका के एंडीज वन प्रान्तों में पाया जाने वाला जीव 'लामा' एक प्रकार का ऊँट ही है, जिसकी पीठ पर कूबड़ नहीं होता है।

इसका आकार अपेक्षाकृत छोटा होता है, लगभग ३-४ फुट। पूंछ भी बहुत छोटी होती है तथा शरीर बालों से ढँका रहता है। सन् १९५३ में फ्रांसिसको पिजारो के सेनापतित्व में स्पेन के सैनिकों ने जब दक्षिणी अमरीका के पेरू प्रदेश पर कब्जा किया तो इन ठिगने कद-काठी के बिना कूबड़ वाले ऊँट को देखकर वे आश्चर्य पड़ गये। खानों से निकाली गयी धातुएँ और अन्य आवश्यक चीजें, इनकी पीठ पर लादकर दूर-दूर तक भेजी जाती हैं। छोटे लामा ६०० पौंड तक तथा बड़े लामा २०० पौंड तक भार वाहन कर सकते हैं और वे इतने वजन के साथ आसानी से २०-२५ मील तक की यात्रा तय कर लेते हैं।

पूर्व समय में लामा भार ढोने के अलावा पेरूवासियों का संदेश भी इधर-उधर पहुँचाते थे। संदेश भेजने का तरीका बड़ा रोचक था। इनके पेट के बालों को रंग-बिरंगे सांकेतिक धागों से बांधकर निर्दिष्ट स्थान तक भेज दिया जाता था। वहाँ उन संकेतों के अर्थ समझ लिये जाते थे। इस प्रकार लामा

सैकड़ों मील की दूरियों के बीच संपर्क सूत्र का काम करते थे।

इस ठिगने कद-काठी वाले लामा का रंग सफेद और काला दोनों होता है। यह झुंड में पहाड़ों और जंगलों में विचरण करता है। झुंड के कुछ लामा रखवाली भी करते हैं जो चीख करके खतरे या संकट की सूचना देकर साथियों को सावधान कर देते हैं। पालतू लामा में नर, भार वाहन के काम में आते हैं। मादा से दूध प्राप्त किया जाता है तथा मांस भी।

लामा की तीन प्रमुख श्रेणियाँ हैं- ग्वानको, बिक्यूना तथा अल्पका। ग्वानको दक्षिणी अमरीका के दक्षिणी मैदानों में मिलता है। अल्पका एक पालतू जाति है लामा की। इसका शरीर मुलायम रोओं से ढका रहता है जिससे रेशम तैयार किया जाता है। बिक्यूना एडीज पर्वत पर काफी ऊँचाई पर पाया जाता है। ये वहाँ के मूलवासियों के लिए बड़े महत्वपूर्ण रहे हैं और वे इसे राजसी लामा मानते हैं। वस्तुत: १८०० फुट की पर्याप्त ऊँचाई पर पाये जाने वाले इन जानवरों की रेशमी खाल और मखमली मुलायम रोएं राजाओं तक ही सीमित थे- जन सामान्य की पहुँच के बाहर इनकी बेशकीमती खाल के लिए पेरू सरकार ने लोभी शिकारियों पर नियंत्रण लगा दिया है।

- शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

विज्ञान कथा

विचित्र यात्रा

प्रस्तुति - संकेत

आलेख देर रात अपने कम्प्यूटर पर काम कर रहा था कि तभी-

ओह! यह कम्प्यूटर कौनसी भाषा के शब्द दिखा रहा है?.. क्या हुआ इसे?!!

अचानक-

अंय.. ये प्रकाश कैसा..

उसने खिड़की से देखा-

अरे !!! विश्वास नहीं होता उड़नतश्तरी...

नमस्ते श्रीमान क्या हमें सहयोग देने को तैयार हैं?

कौन..कौन है?

पीछे पलटिए..

मैं राइनस हूं पृथ्वी से सात लाख प्रकाश वर्ष दूर स्थित रिनोरस ग्रह का प्राणी.. तुम्हारे ग्रह से मानव सहित कुछ चीजें मुझे वहां ले जानी है...

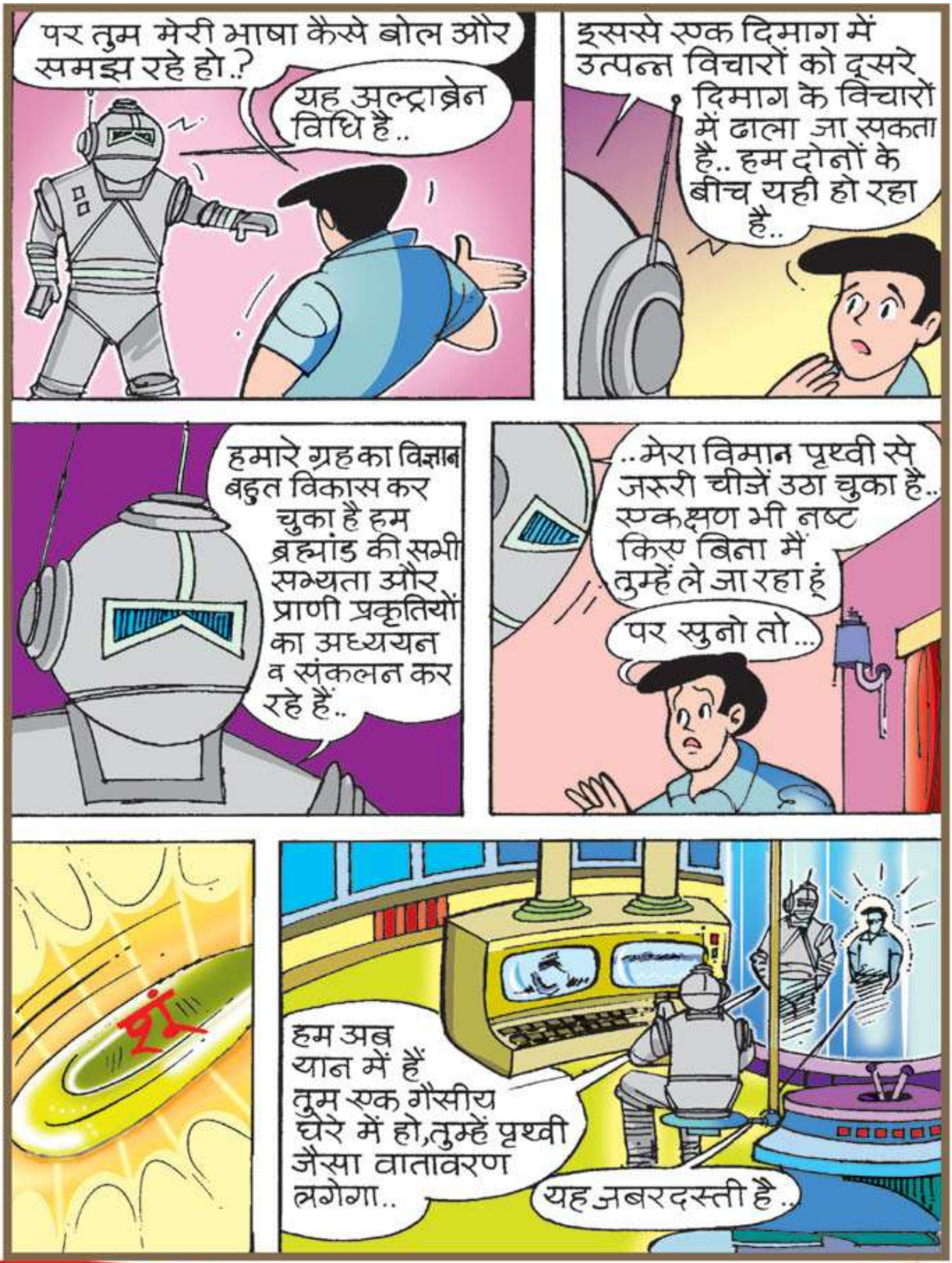

पर तुम मेरी भाषा कैसे बोल और समझ रहे हो..?
यह अल्ट्राब्रेन विधि है..
इससे एक दिमाग में उत्पन्न विचारों को दूसरे दिमाग के विचारों में ढाला जा सकता है.. हम दोनों के बीच यही हो रहा है..
हमारे ग्रह का विज्ञान बहुत विकास कर चुका है हम ब्रह्मांड की सभी सभ्यता और प्राणी प्रकृतियों का अध्ययन व संकलन कर रहे हैं..
..मेरा विमान पृथ्वी से जरूरी चीजें उठा चुका है.. एक क्षण भी नष्ट किए बिना मैं तुम्हें ले जा रहा हूं
पर सुनो तो...
शूं
हम अब यान में हैं तुम एक गैसीय घेरे में हो, तुम्हें पृथ्वी जैसा वातावरण लगेगा..
यह जबरदस्ती है..

नहीं, तुम नहीं तो कोई दूसरा जीव लाया जाता..
मेरा क्या करोगे?
..देखते जाओ..तुम्हें हानि नहीं होगी.. हमारे ग्रह पर तुम्हारा स्वागत है.. हम पहुंच चुके हैं..
..यह प्रयोगशाला है... तुम्हारा क्लोन बनाने और परीक्षण करने का आदेश मुझे मिल रहा है..
आलेख को एक जगह बैठाया गया..जहां अंधेरा फैल गया कुछ देर बाद-
सभी परीक्षण पूरे हुए-
यकीन नहीं आता किसी दूसरे ग्रह पर हूं..पृथ्वी से बहुत दूर...
सुनो, अब तो मुझे पृथ्वी पर वापस भेज दो..
नहीं, तुम्हारे सहयोग के लिए हमारे प्रधान तुम्हें उपहार देने आ रहे हैं..

प्रधान आरू-
डरने की आवश्यकता नहीं पृथ्वीवासी, हमारा विज्ञान ब्रह्माण्ड की भलाई के लिए है.. मुझे खुशी है..तुमने हमें बिना असफल विरोध किए पृथ्वी जीवों की प्रकृति का ज्ञान लेने दिया -
..और कर भी क्या सकता था..
यह लो उपहार. इन जूतों को पहनकर तुम किसी भी सतह पर चल सकोगे.. विदा! शुभकामनाएं
..इससे पहले कि आलेख कुछ कहता, प्रकाश के एक गोले ने उसे खींच लिया -
..वह कुछ ही क्षण में फिर से अपने कम्प्यूटर के सामने बैठा था..
उसके लिए दूसरे ग्रह की यात्रा की यह घटना विचित्र सपने जैसी थी. और इस सपने की सचाई का यकीन दिला रहे थे उपहार में मिले विचित्र जूते.
समाप्त:

गुरु भक्त आरुणि

– मोहनलाल जोशी

धौम्य नाम के एक ऋषि थे। उनके अनेक शिष्य थे। एक शिष्य का नाम आरुणि था। वह गुरुजी के सारे काम करता था। खेतों का ध्यान रखता था।

एक बार तेज बरसात हुई। सभी ओर पानी बहने लगा। धौम्य ऋषि ने आरुणि से कहा– ''खेत में अनाज उगा हुआ है। वहाँ पानी मत जाने देना।''

आरुणि खेत में चला गया। एक जगह कच्ची मिट्टी थी। पानी खेत में भर रहा था। उसने वहाँ पर खूब मिट्टी डाली। फिर भी पानी नहीं रूका। आरुणि स्वयं वहाँ पर सो गया। उसने खेतों में पानी नहीं जाने दिया। परन्तु वह बेहोश हो गया।

बहुत देर बाद धौम्य ऋषि उसे ढूँढ़ते–ढूँढ़ते वहाँ आये। अपने शिष्य को मूर्छित अवस्था में देखा। उसे उठाकर सीने से लगा लिया। गुरु भक्ति का ऐसा आदर्श था– गुरु भक्त आरुणि।

उपमन्यु की परीक्षा

उपमन्यु धौम्य ऋषि का शिष्य था। वह आश्रम के लिये भिक्षा लाता था। गायें चराने जाता था। गुरु के देने पर ही भोजन करता था।

एक बार धौम्य ऋषि ने उसकी परीक्षा ली। उन्होंने उपमन्यु को भोजन देना बंद कर दिया। वह जंगल में गायों का दूध पी लेता था। गुरुजी ने दूध पीने से भी मना कर दिया।

आज्ञाकारी उपमन्यु ने दूध भी नहीं पिया। एक दिन वह बहुत भूखा हो गया। उसने आँक के पत्ते खा लिये। आँक के जहर से वह अंधा हो गया। वह एक सूखे कुएँ में गिर गया।

उपमन्यु आश्रम नहीं आया तो गुरुजी उसको खोजने लगे। उपमन्यु को अंधा देखकर उन्होंने अश्विनी कुमारों को बुलाया। उपमन्यु की आँखें ठीक कर दीं। वह उनका प्रिय शिष्य बन गया।

– बाड़मेर (राजस्थान)

गोपाल का पगार

– तपेश भौमिक

लंबे समय से गोपाल का पगार जस का तस था। जब भी गोपाल अपना पगार बढ़ाने के लिए महाराज से विनती करता तभी वे कोई–न–कोई बहाना बनाकर उसकी बात को टाल देते। दरअसल कंजूसी के कारण महाराज उसकी जितनी अनदेखी करते गोपाल भी अपनी बात मनवाने के लिए उनके पीछे पड़े रहते।

गोपाल को अपना पगार बढ़वाना था। इस बात पर महाराज और उसके बीच कुछ कहासुनी हो गई। महाराज कहते अकेले तुम्हारी पगार बढ़ाने से काम न चलेगा। बाकी सभासदों की भी पगार बढ़ानी होगी। ऐसी ही बातों–बातों में गोपाल ने अपनी नौकरी छोड़ दी। घर जाकर गाल फुलाए बैठा रहा। पत्नी के पूछने पर उसने सारी बातें बता दी तो वह सर पकड़कर बैठ गई। गोपाल ने इतना भर कहा कि जो भी जमीन है उस पर खेतीबाड़ी करके हम गुजारा कर लेंगे। पत्नी ने केवल यह कहा कि राज–रोष में पड़कर किसी का कभी भला नहीं होता।

उन्हीं दिनों मुर्शिदाबाद के नवाब बहादुर निठल्ला चल रहे थे। संधि प्रस्ताव के अनुसार आस–पास के कई राज्यों से उन्हें अच्छा कर मिल जाया करता था। कहते हैं न कि बैठा बनिया तौले धनिया। यही बात नवाब साहब के साथ भी थी। एक दिन उनके दिमाग में एक खुराफाती सोच घर कर गई। उन्होंने अपने संवाद–वाहकों के द्वारा महाराज कृष्णचन्द्र को एक पत्र भेजा। साथ में एक लोहे का पिंजरा, जिसके अंदर एक शेर की मूर्ति। उन्होंने पत्र में लिखा कि शेर की मूर्ति पीतल की बनी हुई है और उसे

पिंजरे का दरवाजा बिना खोले निकालना है। नहीं निकाल पाने पर कर की राशि बढ़ा दी जाएगी। इस बात पर महाराज काफी सोच में पड़ गए। आवश्यक सभा बुलाई गई पर कोई हल न निकला।

अंत में पुरोहित ने कहा कि गोपाल ही एक मात्र ऐसा आदमी है जो इस समस्या का निदान बता सकता है। महाराज ने साफ कह दिया कि गोपाल के आगे वे बिलकुल नहीं झुकने वाले हैं।

बात फैलते-फैलते एक तरफ रानी माँ तक पहुँची तो दूसरी तरफ कानों-कान गोपाल तक भी पहुँच गई। महारानी ने गोपाल से सलाह लेने की बात कही तो महाराज ने सारी बात बता दी। इस पर उन्होंने महाराज को कहा कि गोपाल ही एकमात्र इस गुत्थी को सुलझा सकता है। अत: उसे बुला लीजिए। महाराज भी अपनी बात पर अड़े रहे। वे टस से मस नहीं होने वाले थे।

अब महारानी ने स्वयं ही एक संवाद वाहक को गोपाल के पास दौड़ा दिया तो उसने भी बिना कोई समय गँवाए रानी माँ की सेवा में अपनी हाजरी लगा दी। रानी माँ से सारी बातें उसने सुनी तो इतना भर कहा कि चिंता की कोई बात नहीं हैं, कोई-न-कोई रास्ता तो अवश्य निकल कर रहेगा। महाराज ने मन ही मन मुस्कुराकर बनावटी क्रोध में रानी माँ से केवल इतना कहा कि अब देखो गोपाल का घपला, वह कौन-सा गुल खिलाता है?

गोपाल ने पिंजरे के अंदर शेर को देखा। शेर पीतल का बना लग रहा था। उसने लोहे के दो लंबे छड़ मंगवाये, जिनमें से एक को आग में तपा कर लाने को कहा। लोहे के छड़ आ गए तो उसने ठंडे छड़ को पिंजरे में घुसाकर शेर की पीठ पर ठोका। इस पर ऐसी आवाज निकली कि वह किसी धातु की न होकर किसी अन्य नरम पदार्थ की बनी हुई हो, जिस पर पीतल जैसा रंग चढ़ा दिया गया हो।

अब उसने गरम छड़ को शेर के पेट में घुसेड़ दिया तो पानी जैसा कुछ तरल उजले धुएँ के साथ निकलने लगा। अब यह बताने की आवश्यकता नहीं थी कि शेर मोम का बना था। गोपाल ने कड़ी धूप में पिंजरे को रखवा दिया और संवाद वाहकों से कहा कि गले हुए शेर को ले जाना। संवाद वाहकों ने जब यह प्रश्न उठाया कि शेर पिघल गया है, तब गोपाल ने अपना तर्क देते हुए कहा कि हमारा काम था शेर को निकालना, तो उसे निकाल दिया गया है। सारे लोग गोपाल की जय-जयकार करने लगे। महाराज का चेहरा भी खिल उठा।

अब रात को जब महाराज रनिवास में पहुँचे तो रानी माँ कहने लगीं कि दूसरे सभासदों के साथ गोपाल की तुलना न करें, उसका अकेला दिमाग जितना तेज है, सबका मिलाकर भी उतना तेज नहीं है। उसका तत्काल वेतन बढ़ा दिया जाए। महाराज अब भी अड़े हुए थे। बातों-बातों में रानी माँ और महाराज में कहा सुनी हो गई। गुस्से में आकर महाराज ने यह कह दिया कि वह कल सुबह होते ही अपने पिता के यहाँ चली जाए। उसके लिए इस महल में कोई स्थान नहीं है। दूसरी सुबह मुँह अँधेरे रानी माँ ने अपनी दासी को गोपाल के पास सब कुछ कहला भेजा। गोपाल ने कहला भेजा कि रानी माँ जितना जेवर हो सके पहन लें और महाराज से विदा होकर दासी के साथ मेरे यहाँ आ जाएँ। रानी माँ ने उसके कहे अनुसार काम किया। महाराज अब भी अड़े हुए थे। उन्होंने केवल इतना कहा कि वह इतने जेवर पहनकर क्यों जा रही है। इस पर रानी माँ ने कहा कि मैं रानी हूँ, रानी जैसी ही जाऊँगी, कोई भिखारिन तो नहीं। आखिर महाराज का भी तो कोई सम्मान है। झगड़े होते हैं, इसलिए पति के सम्मान को कभी भी वह कम नहीं कर सकती। महाराज ने कुछ न कहा।

गोपाल की पत्नी ने रानी माँ का खूब आदर सत्कार किया। उसने कहा कि मेरे सात जन्मों के पुण्य का फल है जो रानी माँ मुझ गरीब के घर आयीं हैं,

मैं तो धन्य हो गई।

थोड़ी देर बाद महाराज का क्रोध शांत पड़ गया। उन्होंने मन-ही-मन सोचा कि जो बहुत अपने होते हैं उनके साथ ही थोड़ी-सी अनबन हो भी जाए तो उन्हें मना लेना चाहिए। यही समझदारी है। मैं तो थोड़े समय में ही पागल हो गया हूँ। गोपाल जैसा दोस्त और रानी जी जैसी पतिव्रता स्त्री के बिना तो जीना कठिन है। उन्होंने महारानी के दासियों को बुलाकर धमकाया कि उन सबने रानी माँ को क्यों जाने दिया। थोड़ी ही देर में महाराज का रथ गोपाल के द्वार पर लग गया। महाराज ने रानी माँ को बुरा-भला कहने के कारण क्षमा माँग ली गोपाल रो पड़ा। सबकी आँखें गिली हो गई। महाराज ने गोपाल से पूछा कि उसका वेतन कितना बढ़ा दिया जाए? इस पर उसने रोते हुए कहा, कि मेरे ही कारण इतना कुछ हुआ। आप दोनों मेरे लिए पिता-माता समान हैं। अब मैं कभी कोई जिद्द नहीं करूँगा। रानी माँ ने अपने गले से सोने का एक हार उतारकर गोपाल की पत्नी के गले में पहना दिया। सारे लोग ''धन्य है! धन्य है!!'' कहने लगे।

- गुड़ियाहाटी, कूचबिहार (पं. बंगाल)

प्रसंग- बलिदान दिवस १७ फरवरी

वासुदेव बलवंत फडके

- ललित नारायण उपाध्याय

आपको आधुनिक भारत का प्रथम क्रांतिकारी कहा जाता है। आपने सबसे पहले अँग्रेजों को देश से बाहर करने के लिए शस्त्र उठाए थे। बंकिमचंद्र चटर्जी द्वारा देशभक्ति पूर्ण उपन्यास 'आनंद मठ' श्री फडके जी की प्रेरणा से ही लिखा गया था, ऐसी मान्यता है।

आपने सबसे पहले ३०० साहसी भील धागरों और कोलियों को इकट्ठा कर सशस्त्र हमले किए। इस प्रकार १८५७ के युद्ध के बाद यह पहला बड़ा दल था, जो अँग्रेजों के विरुद्ध शस्त्र लेकर आगे आया था।

जब अँग्रेज सरकार ने फडके को गिरफ्तार करने के लिए इनाम की घोषणा कि तो फडके जी ने यह घोषणा कर डाली कि- ''जो कोई मुंबई के गवर्नर को जिंदा (पकड़) गिरफ्तार कर लाएगा, उसे मैं पुरस्कार दूँगा।''

अंततः जुलाई १८७९ को ये गिरफ्तार कर लिए गए। अँग्रेज सरकार की निगाह में ये इतने खतरनाक थे कि इन्हें अंडमान-निकोबार की जेलों में न रखकर 'अदन' की जेलों में भेजा गया। वहाँ आजन्म कारावास काटते हुए वर्ष १८८३ में ३८ वर्ष की आयु में इनका निधन हो गया।

- खण्डवा (म. प्र.)

मटकू का जन्मदिन

– पवन कुमार वर्मा

सर्कस का खेल समाप्त हो चुका था। मटकू बौना आज सुबह से उदास था। कल उसका जन्मदिन है। ऐसे में आज उसे अपनी माँ की बहुत याद आ रही थी। मटकू की माँ मटकू का जन्मदिन बड़े उत्साह से मनाती थीं। लेकिन अब वह इस दुनिया में नहीं है! वैसे भी माँ के अलावा मटकू का इस दुनिया में और कोई था भी नहीं।

रात का खाना खाने के बाद मटकू लकड़ी के पटरे पर लेट गया। उसके सोने का यही तो एक स्थान था। बौना होने के कारण उसे बहुत स्थान की आवश्यकता भी नहीं पड़ती थी।

आसमान में तारे टिमटिमा रहे थे। पुरानी बातें याद करके मटकू की आँखों में आँसू निकल आते थे। माँ कितने धूम-धाम से उसका जन्मदिन मनाती थीं? सुबह से ही वह मटकू की पसन्द के पकवान बनाने में लग जाती थीं।

लेकिन अब तो ऐसा कुछ भी नहीं था। मटकू की आँखें झपकने लगीं। चारों ओर सन्नाटा छाया था। उसे जोरों की नींद आ रही थी। तभी उसे आसमान में एक चमकती वस्तु दिखाई पड़ी। मटकू बौने को कुछ समझ में नहीं आ रहा था। थोड़ा और पास आने पर मटकू उसे देखकर चौंक पड़ा। यह तो माँ थीं।

''माँ! तुम! तुम मुझे अकेला छोड़कर कहाँ चली गईं थीं?'' मटकू उसे देखते ही उठकर बैठ गया।

''कहीं नहीं बेटा! मैं तो हमेशा तुम्हारे पास हूँ! तुम इतने प्यारे हो, भोले हो.. तुम्हें भला कौन छोड़ सकता है?'' माँ बोलीं।

''सच माँ! मुझे तुम्हारी बहुत याद आती है।'' मटकू की आँखों से आँसू बह रहे थे।

''मैं हमेशा तुम्हारे पास ही हूँ बेटा!.... और हाँ! अब तो तुम सर्कस में बहुत बड़े-बड़े करतब दिखाने लगे हो। मैं तुम्हारे सारे खेल देखती हूँ।'' माँ बोलीं।

''सच माँ! लेकिन कुछ लोग ऐसे हैं जो मुझे 'बौना-बौना' कहकर चिढ़ाते हैं।'' मटकू बोला।

''कोई बात नहीं बेटा! उनकी बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिये। जरा सोचो। बहुत सारे लोग तुम्हारे करतब को देखकर हँसते हैं... तालियाँ

बजाते हैं। यह सब केवल तुम ही कर सकते हो.. तुम पर हँसने वाले कभी नहीं कर सकते... है न? लोगों को हँसाना आसान नहीं होता।'' माँ उसका सिर सहलाते हुए बोलीं।

''हाँ माँ! लेकिन बच्चे मुझसे बहुत प्यार करते हैं। वे हमारे पास आना चाहते हैं। मुझसे हाथ मिलाना चाहते हैं।'' मटकू उछलते हुए बोला।

''उस समय मुझे बहुत खुशी होती है। मैं सोचती हूँ कि मेरा बेटा बच्चों में कितना लोकप्रिय है।'' माँ उसका उत्साह बढ़ाते हुए बोलीं।

''बच्चे मुझे भी बहुत प्रिय हैं माँ!'' मटकू माँ की गोद में सिर रखते हुए बोला।

तभी उसे जोर-जोर से तालियों की आवाज सुनाई पड़ी। अचानक शोर-गुल सुनकर वह चौंक पड़ा! वहाँ ढेर सारे बच्चे जमा थे। लेकिन माँ न जाने कहाँ गायब हो गयीं?

अब उसे समझ में आया। असल में वह सपना देख रहा था। आँखें मलता हुआ वह उठ खड़ा हुआ।

''जन्मदिन की बधाई।'' चारों ओर से यही आवाज आ रही थी।

''आप लोग कौन हैं? और हाँ! आपको मेरे जन्मदिन के बारे में कैसे पता चला?'' मटकू उनमें से एक बच्चे से पूछा।

''ये बच्चे मेरे विद्यालय के हैं। मेरे विद्यालय के बच्चों में आप बहुत लोकप्रिय हैं। ये सब आपसे बहुत प्यार करते हैं। इन बच्चों को आपके जन्मदिन की तिथि जाननी थी।

सर्कस के मालिक ने आपके आधार कार्ड से इस बारे में हमें बताया।'' विद्यालय के अध्यापक ने मटकू को विस्तार से सब कुछ बताया।

पास खड़े सर्कस मालिक मुस्करा रहे थे। फिर क्या था। मटकू झटपट नहा-धोकर तैयार हो गया। उसने बच्चों द्वारा लाए गए लड्डू बाँटे गए।

सर्कस में काम करने वाले लोगों ने भी जमकर लड्डू खाये। बच्चों ने मटकू को बहुत से उपहार भी दिये।

सर्कस मालिक ने वहाँ आये बच्चों को सर्कस का विशेष कार्यक्रम देखने के लिये आमंत्रित किया। वह भी नि:शुल्क।

बच्चों के साथ-साथ मटकू भी खुशी से झूम उठा। उसने सिर ऊपर उठाकर आसमान की ओर देखा और बोला- ''धन्यवाद माँ! अब मैं अकेला नहीं हूँ।''

- वाराणसी (उ. प्र.)

मौके पर सूझबूझ

– रजनीकांत शुक्ल

देश के पूर्वोत्तर राज्यों में मणिपुर राज्य कुछ विशेष है। मणिपुर का अर्थ है मणियों की भूमि। प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर इस भूमि का अपना एक प्राचीन और समृद्ध इतिहास भी है। इसके उत्तर में नागालैंड दक्षिण में मिजोरम पश्चिम में असम और पूर्व में इसकी सीमा पड़ोसी देश म्यांमार से मिलती है।

इसी मणिपुर राज्य में वर्ष १९९९ की बात है। तब नवंबर का महीना था और तारीख थी सोलह। उस समय दोपहर के लगभग तीन बजे होंगे जब ग्यारह वर्ष का एक लड़का लेशराम उत्तम कुमार सिंह अपने धान के खेत से घर की ओर वापस आ रहा था। उसके पिता का नाम लेशराम दिलीपकुमार सिंह था। उसके साथ–साथ उसका मित्र निंगथोऊजाम भेग्याचन्द्र सिंह भी था।

दरअसल सुबह ही वे दोनों खाना खाकर खेतों की ओर निकल आए थे। उन्हें उनके घर के लोगों ने खेतों से जानवरों के खाने हेतु चारा लाने को कहा था। बस फिर क्या था एक से भले दो। दोनों ने मिलकर तय कर लिया और एक साथ जाने का निश्चय किया। वे दोनों हम उम्र थे और उनमें पटती भी खूब थी। घर के सुबह के कामों से फुरसत पाकर दोपहर का खाना खाकर निंगथोऊजाम भेग्याचन्द्र सिंह लेशराम उत्तम कुमार सिंह के घर आ गया और बोला– ''चलो अब चलते हैं खेतों पर..।''

उत्तम भी तैयार ही था। वह उसकी राह देख रहा था। कुछ ही देर में वे दोनों आपस में बातें करते हुए खेतों की ओर चल पड़े। अब वहाँ उन्हें आपस में मिलकर खूब खेलना मस्ती करना था और आते समय जानवरों का चारा ले आना था बस। यही हुआ भी जब वे खेतों के पास पहुँचे तो खुले–खुले गगन और हरी भरी धरती ने उनका मन मोह लिया। उनके घर के पास से ही पड़ोसी देश म्यांमार के लिए सीधी सड़क भी बनी हुई थी। जहाँ से वाहनों का आना–जाना अक्सर लगा रहता था। वे दोनों खेतों में खूब खेले और फिर जब जी भर गया तो बोले– ''आओ चलो अब वापस चलते हैं।'' उन्होंने अपने–अपने सिर पर धान की भूसे का गट्ठर लाद लिया। अब वे आपस में बातें करते हुए घर की ओर चले जा रहे थे।

अभी वे रास्ते में ही थे कि उनकी दृष्टि एक मुर्गी पर पड़ी। बस फिर क्या था दोनों के मन में शरारत जाग उठी।

भेग्याचन्द्र बोला– ''आओ उत्तम हम लोग इस मुर्गी को पकड़ते हैं। मजा आएगा।''

उत्तम भी तुरन्त तैयार हो गया।

बस भेग्या ने न आव देखा न ताव मुर्गी को पकड़ने के लिए अपने सिर पर रखे धान के भूसे के गट्ठर को वहीं बगल में धीरे से रख दिया। उसकी दोनों आँखें उस समय मुर्गी की एक–एक हरकत पर थी। इस चक्कर में उसने यह नहीं देखा कि जहाँ उसने अपना भूसे का वह गट्ठर रखा है वहाँ एक लोहे का जाल भी था। जिससे होकर बिजली का करंट दौड़ रहा था।

अब चूँकि भेग्या का सारा ध्यान मुर्गी की ओर था इसलिए उसका हाथ लापरवाही में उस लोहे के जाल पर ही पड़ा। हाथ के लोहे के जाल पर पड़ते ही बिजली ने उसे अपनी चपेट में ले लिया। उसका शरीर झनझनाया और सारा शरीर चेतना शून्य हो गया।

अभी उत्तम अपने सिर का गट्ठर नीचे उतार भी

नहीं पाया था कि यह दुर्घटना घट गई थी। उसने पीछे पलटकर देखा तो भेग्या को आवाज दी मगर भेग्या को होश होता तभी तो वह कुछ उत्तर दे पाता। अब उत्तम समझ गया कि कोई गड़बड़ हो गई है। उसने तुरन्त गट्ठर नीचे जमीन पर पटका और भेग्या की ओर दौड़ लगा दी और फिर उसने भी वही किया जो नासमझी में लोग ऐसे में अक्सर कर जाते हैं। उसने भेग्या को उठाने का प्रयत्न किया। किन्तु भेग्या को हाथ लगाते ही उत्तर को जोर का झटका लगा और वह अपना संतुलन खोकर पीछे गिर पड़ा। अब उत्तर को समझ में आ गया कि भेग्या बिजली की चपेट में आ चुका है। उसने अपने चारों ओर नजर दौड़ाई किन्तु उसे कोई भी नहीं दिखाई दिया। उसने सोच लिया कि भेग्या की जान बचाने के लिए अब जो कुछ भी करना है उसी को करना होगा। उसने अपने चारों ओर एक बार फिर खोजपूर्ण दृष्टि दौड़ाई तो उसकी आँखों में चमक आ गई जब उसकी दृष्टि धान के भूसे वाले गट्ठर को बाँधने वाले तौलिए पर पड़ी।

वह झट से दौड़ा और तुरन्त गट्ठर को खोलकर उस छोटे तौलिये को निकाला और फिर उसे फुर्ती से अपने हाथ के चारों ओर लपेट लिया। इस तरह उसने पहले अपने आपको सुरक्षित कर लिया अब वह तेजी से भेग्या की ओर दौड़ पड़ा। उसे चूँकि एक बार करंट लग चुका था इसलिए वह अतिरिक्त सतर्क था।

स्वयं को बचाते हुए उसने भेग्या को उस जाल के फँदे से अलग करके मुक्ति दिलाई। उसने भेग्या को हिला-डुलाकर उठाने का प्रयत्न किया किन्तु भेग्या को अभी होश नहीं था। अब उत्तम ने सहायता के लिए अपने चारों ओर देखा तो उसे कुछ ही दूरी पर एक नशामुक्ति केन्द्र दिखाई दिया। उसने तुरन्त उस ओर दौड़ लगा दी।

नशामुक्ति केन्द्र में पहुँचकर उसने जब वहाँ के लोगों को सारी बात बताई तो वहाँ का मेडिकल स्टाफ तुरन्त उत्तम के साथ घटनास्थल पर जा पहुँचा। उनके द्वारा किए गए उपचार से भेग्या को कुछ देर बाद होश आ गया। अपनी शरारत और लापरवाही पर वह बहुत शर्मिंदा था। उसकी जान बचना नामुमकिन था अगर उत्तम मौके पर लिए गए सूझबूझ पूर्ण निर्णय से स्वयं को बचाते हुए उसे उस खतरनाक जाल से अलग न करता।

नशामुक्ति केन्द्र के लोगों को आश्चर्य था कि जहाँ ऐसी स्थिति आने पर बड़ी उम्र के लोग भी घबराहट में अपना होश खो बैठते हैं मात्र ग्यारह वर्ष के उत्तम ने सूझबूझ से निर्णय लेकर जो उचित था वही काम पहले किया। अगर हड़बड़ी में वह पहले भेग्या को जाल से हटाए बिना नशामुक्ति केन्द्र सहायता के लिए दौड़ पड़ता तो भेग्या की जान नहीं बचती।

समझदारी और साहस से परिस्थिति का सामना करते हुए उत्तम ने जिस घटना को अंजाम दिया वह सराहनीय थी। लोगों ने पूरी घटना का ब्यौरा उचित माध्यम से जब भेजा तो उत्तम का नाम राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार प्राप्त बच्चों की सूची में चुन लिया गया। उत्तम को वर्ष २००० का राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार देश की राजधानी दिल्ली में प्रधानमंत्री जी के हाथों २००१ के गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर प्रदान किया गया।

नन्हें दोस्तो,

मौके पर हिम्मत मत हारो, करो सामना डट कर,
संकट तभी बड़ा लगता है, रहें जो उससे डर कर।
साहस कर आगे आए तो पा जाओगे ऐसा,
जिसके आगे छोटा लगता धन दौलत और पैसा।

– नई दिल्ली

पुस्तक परिचय

बून्दों की चौपाल संपादक – डॉ. आर. पी. सारस्वत

प्रकाशक– नीरजा स्मृति बाल साहित्य न्यास एन. १६७–१६८ पैरामाउण्ट ट्यूलिप दिल्ली रोड, सहारनपुर–२४७००१ (उ. प्र.)

मूल्य– १२७०/–

डॉ. आर. पी. सारस्वत यानि श्री रामेश्वर प्रसाद सारस्वत बाल साहित्य जगत में अनजाना नाम नहीं है। वे अपनी निरंतर सृजनात्मक अवदान के लिए सुप्रसिद्ध हैं। स्वयं बहुत श्रेष्ठ रचनाकार हैं ही बहुत निष्ठावान संपादक भी हैं। उनकी संपादनशील प्रतिभा कितनी सर्वांगी है कितनी व्यापक और खोजी इसका एक और प्रमाण उनकी यह संपादित कृति 'बूंदों की चौपाल' है। इस कृति में अपने और अपने पूर्ववर्ती काल के २०१ रचनाकारों की ५५५ श्रेष्ठ बाल कविताएँ संकलित हैं। यह कार्य कितना श्रमसाध्य होगा यह कल्पना की जा सकती है। विविध विषयों पर देशभर के प्रख्यात बाल कविताकारों की ये रचनाएँ बाल साहित्य प्रेमियों के लिए एक कोश है, सन्दर्भ–सागर है। बच्चों के लिए इसकी उपादेयता ऐसी कि कोई भी पृष्ठ खोलो और आनंद में डूब जाओ, मस्ती में उछल पड़ो। कोई भी विषय हो इसमें प्राय: उन पर कविता मिल जाएगी।

बाल कविता की समझ विकसित करती सुदीर्घ भूमिका और अन्त में २०१ रचनाकारों के पते इस ६३८ पृष्ठ की पुस्तक का महत्व और भी बढ़ा देते हैं।

'बून्दों की चौपाल' प्रभुदयाल श्रीवास्तव जी की कविता का शीर्षक है जो किताब की 'संज्ञा' भी बना है। नीरजा स्मृति न्यास के पुरोधा रहे स्व. श्री कृष्णशलभ जी ने बाल काव्य संचयन की जो परंपरा बढ़ायी उसे पूरी निष्ठा से और आगे बढ़ाते हुए श्री सारस्वत का यह प्रयास निश्चित ही अभिनंदनीय है।

यह ग्रंथ निश्चय ही विद्यालयीन और निजी पुस्तकालयों में यह चिरकाल तक बाल कविता के क्षेत्र में उल्लेखनीय एवं संग्रणीय धरोहर बनेगा।

फिसलन पट्टी

– शादाब आलम,
लखनऊ (उ. प्र.)

अट्टम–बट्टम–कट्टम–कट्टी
चीज गजब की फिसलन पट्टी
चलो चलें हम जमकर फिसलें
फिसल–फिसलकर चड्ढी घिस लें
भूले से इस पर मत चलना
और ध्यान से जरा फिसलना

दिखती है कुछ गीली मिट्टी
छिपी हुई घासों में गिट्टी
कोई गिट्टी अगर चुभेगी
नाजुक हड्डी बहुत दुखेगी
धो लेंगे हम गन्दी चड्ढी
पर जोड़ेंगे कैसे हड्डी ?

पुण्य या पाप

– राजीव नामदेव 'राना लिधौरी'

दादा जी सुबह चार बजे प्रतिदिन घूमने जाते और लौटते समय एक थैली में भरकर फूल लेकर आते थे। मेरी बच्ची ने एक दिन उनसे पूछा ''दादा जी! आप रोज-रोज इतने सुंदर फूल कहाँ से लेकर आते हैं?''

दादा जी बोले ''घूमने जाता हूँ तो रास्ते में एक घर में सामने दरवाजे के पास फूल लगे होते हैं तो मैं उन्हें छड़ी की सहायता से तोड़ लेता हूँ।''

बच्ची ने फिर पूछा ''कोई रोकता-टोकता नहीं?''

दादा जी ''अरे! उस घर के लोग तो आठ बजे सोकर उठते हैं।''

बच्ची ने फिर प्रश्न किया ''दादा जी! ये फूल तोड़कर किसलिए लाते हो?''

दादा जी ''तुम्हारी दादी प्रतिदिन पूजा करती है। न उन्हें लाकर दे देता हूँ वह इतने अच्छे फूल देखकर बहुत प्रसन्न हो जाती है।''

बच्ची ''क्या होता है ये फूल चढ़ाने से?''

दादा जी ''अरी पगली! इतना भी नहीं जानती? भगवान प्रसन्न हो जाते हैं और बहुत पुण्य मिलता है।''

बच्ची ''अच्छा! लेकिन आप तो फूल चुराकर लाते हैं और चोरी करना पाप है? तो फिर पुण्य कैसे हुआ? कोई पूछकर तो आप लाते नहीं और ना ही आपने उन फूलों के पौधे लगाये हैं? अब आप ही सोचिए कि आप पुण्य कमा रहे हैं कि पाप?'' दादा जी निरुत्तर हो गए।

उसी दिन से दादा जी ने फूल तोड़कर लाना बंद कर दिया और स्वयं अपने घर में गमलों में फूल लगाने का निर्णय कर लिया।

– टीकमगढ़ (म. प्र.)

पुष्प पहेली

– राजेश गुजर

इस वर्ग पहेली में १८ सुंदर, रंग-बिरंगे एवं खुशबूदार फूलों के नाम छुपे हैं। जिन्हें आपको ढूँढ़ना हैं ये नाम उल्टे-सीधे, आड़े-तिरछे, खड़े हैं। एक अक्षर का उपयोग अधिक बार भी हुआ है।

ही	बे	गु	ड़	ह	ल	पा
जू	ला	ल	ल	प	ला	रि
ब	म	मो	गें	दा	श	जा
क	ग	ह	रा	के	ऊ	त
रा	म्पा	र	चां	त	लि	दी
च	मे	ली	द	की	रा	ली
नी	र	ज	नी	गं	धा	नी

उत्तर– जूही, बेला, गुलमोहर, चांदनी, केतकी, पारिजात, गुलाब, कमल, मोगरा, चम्पा, चमेली, रजनीगंधा, गेंदा, पलाश, रातरानी, गुलदाऊदी

नीतू की शरारत

– डॉ. के. रानी

जंगल के बीच में स्थित फूलों के बगीचे में टिन्नी तितली, चूचू भँवरा और चमकू ततैया घूम रहे थे। टिन्नी एक सुंदर से गुलाब के फूल पर बैठकर उसका रस पी रही थी।

''टिन्नी! तुम सुबह से फूल पर मंडरा रही हो। अभी तक तुम्हारा रस पीकर पेट नहीं भरा।'' चूचू बोला।

''पेट तो भर गया चूचू! लेकिन मन नहीं भरा।'' टिन्नी बोली।

''ठीक कह रही हो तुम। यही हाल मेरा भी है। इस बगीचे के फूल इतने सुंदर है कि इन्हीं पर मंडरा कर रस पीने का मन करता है।''

''तुम्हारे जैसा हाल मेरा भी है। हमारा तो पूरा कुटुम्ब ही बगीचे के पेड़ों पर रहता है।''चमकू बोला।

''तुम्हारा कुटुम्ब ही नहीं छीनी रानी मधुमक्खी का बड़ा सा दल भी बगीचे के किनारे पर सुंदर से छत्ते में रहता है।'' टिन्नी बोली।

''यहाँ पर इतने सारे फूल खिले हैं कि हम सबका काम आराम से चल जाता है।'' चमकू बोला।

वे सब फिर से फूलों के रस की खोज में फूलों पर मंडराने लगे। चंपी बदरिया अपने नन्हें बेटे नीतू के साथ पेड़ पर बैठी थी। नीतू बड़े ध्यान से शिन्नी, चूचू और चमकू की बातें सुन रहा था।

उसने पूछा– ''माँ! फूलों में रस होता है?''

''हाँ बेटा! तितली, पतंगे, भँवरे और मधुमक्खी उसी से अपना भोजन लेते हैं।'' चंपी बोली।

''माँ! अब हम भी फूलों से ऐसा ही खाना खाएंगे।'' नीतू बोला तो चंपी हँस पड़ी।

''छोटे कीट और पतंगों का खाना अलग प्रकार का होता है और हमारा दूसरी प्रकार का। हम उनका खाना नहीं खा सकते।'' चंपी ने नीतू को समझाया।

''माँ! मैं वही खाना खाऊंगा जैसा ये सब खाते हैं।''

''अच्छे बच्चे जिद नहीं करते नीतू।'' चंपी बोली और नीतू को उठाकर दूसरे पेड़ पर चली गई।

नीतू को अभी भी चैन न था। वह अभी तक टिन्नी, चूचू और चमकू की बातों के बारे में सोच रहा था। पेड़ से फल खाकर चंपी थोड़ी देर सुस्ताने लगी। उसने नीतू को हिदायत दी– ''बेटा! शैतानी मत करना और चुपचाप यहीं बैठे रहना।''

नीतू थोड़ी देर तक माँ की हिदायत के कारण शांत रहा पर अधिक देर उसके लिए चुप बैठना कठिन था। उसके दिमाग में अभी तक फूलों पर मंडराते टिन्नी, चमकू और चूचू ही घूम रहे थे। वह चुपचाप पेड़

से उतर कर फूलों के बगीचे में आ गया। उसने एक फूल तोड़ा। उसे समझ नहीं आया ये सब इसमें क्या खाते हैं। उसने फूल की पंखुड़ी मुँह में डाली तो वह बेस्वाद लगी। उसने एक-एक कर कई फूल तोड़ डाले। उसे ऐसा करते देखकर टिन्नी तितली से न रहा गया। वह बोली-

''नीतू! तुम फूल क्यों तोड़ रहे हो?''

''मैं इसमें खाना ढूँढ़ रहा हूँ।''

''खाने वाले फूल और होते हैं जिन्हें कच्चा और सब्जी बनाकर खाया जाता है।'' टिन्नी ने नीतू को समझाया।

''माँ कहती है तुम इन सुंदर फूलों से रस पीकर अपना पेट भरती हो। मैं वही रस खोज रहा हूँ।'' नीतू बोला। उसकी बात सुनकर टिन्नी हँसने लगी और बोली- ''तुम बहुत भोले हो नीतू! हम तुम्हारी तरह फल-फूल नहीं खा सकते। हम फूलों में छुपे हुए मीठे रस को पीते हैं।''

''कृपया मुझे भी वह रस दिखा दो।''

''उसकी मात्रा इतनी कम होती है कि तुम उसे चख भी नहीं सकते। हम अपनी लंबी सूंड से उसे फूलों से खींचते हैं। हमारा शरीर तुम्हारी तुलना में बहुत छोटा है। फिर भी ढेर सारे फूलों पर मंडरा कर हम अपना पेट भरते हैं।'' टिन्नी ने उसे समझाया।

उन्हें बातें करते देखकर चमकू, चूचू और कई सारी मधुमक्खियाँ वहाँ आ गईं। वे सब जानना चाहते थे कि नीतू ने इतने फूल तोड़कर क्यों नष्ट कर दिए? टिन्नी ने उनसे पूरी बात बताई तो वे भी मुस्करा दिए।

''नीतू! तुम अपने दाँतों की सहायता से सब कुछ खा सकते हो। हम तो बस रस पीकर ही संतोष कर लेते हैं।'' चूचू बोला।

''खबरदार अब फिर कभी इस तरह से फूलों को नष्ट किया। आज हम तुम्हें छोड़ रहे हैं फिर ऐसी हरकत की तो अपने डंक से तुम्हारा हुलिया बिगाड़ देंगे।'' कई सारी मधुमक्खियाँ एक साथ नीतू के सिर के ऊपर चक्कर लगाते हुए बोली।

उनकी बात सुनकर नीतू डर गया।

''हमारे डंक बहुत जहरीले होते हैं नीतू! इनसे बचकर रहना और फूलों को सोच समझकर हाथ लगाना। हम सब इनके पास ही मंडराते रहते हैं।'' चमकू ततैया उसे धमकाते हुए बोला।

नीतू ने एक अच्छे बच्चे की तरह सिर हिलाकर हामी भर दी और वापस अपनी माँ के पास पहुँच गया। चंपी अभी भी सो रही थी। यह देखकर नीतू ने शांति की सांस ली।

अब वह शांत था। माँ के पास बैठकर वह भी ऊँघने लगा। उसे इस बात का संतोष हो गया कि वह फूलों से खाना नहीं ढूँढ़ सकता जैसे तितली, भँवरे, ततैया और मधुमक्खियाँ बिना फूलों को नुकसान पहुँचाए उससे रस चूसकर अपना पेट भरती है।

- चुक्खूवाला
(उत्तराखण्ड)

श्री धनपत सिंह

कहा जाता है कि साहस से बड़ा कोई शस्त्र नहीं होता। यह उक्ति चरितार्थ कर दिखाई थी श्री धनपत सिंह ने जब उनके जबलपुर जिले के खरेहटा गाँव में २७ फरवरी १९६७ की उस ठिठुराती रात में डाकुओं ने हमला कर दिया था।

डाकू ग्रामवासी श्री दादूराम के घर घुस गए और उनको तथा उनकी पत्नी को मार-पीट कर धन-गहनों की पूछताछ करने लगे। पति अचेत हो गए पत्नी ने डरकर गहनों का पता बता दिया। उनके पड़ौसी ने आहट पाकर टॉर्च के उजाले में टोह लेने लगा तो डाकुओं ने उस पर भी गोली चला दी। परन्तु वह सावधान था अत: निशाने पर आने से बच गया और उसने तुरंत गांववालों को जगाकर एकत्र कर लिया।

श्री धनपत सिंह इन्हीं बहादुर गांव वालों में एक थे जो लाठियाँ लेकर डाकुओं को खदेड़ने बढ़ रहे थे। लेकिन डाकुओं द्वारा भयंकर गोलियों की वर्षा करने पर गाँववाले तितर-बितर होने जा रहे थे तब धनपतसिंह ने ही जोश दिलाया। गांव वालों की भीड़ डाकुओं को भी डरा रही थी। वे आननफानन में ४० हजार नकद एवं गहने लेकर भागे। धनपत जी ने कुछ बहादुर गांववालों के साथ उनका पीछा किया। भागते डाकुओं की गोलियों की बौछार के बीच धनपत जी ने लाठी से डाकू सरदार के सिर पर प्रहार किया। उसे दबोचा व उसकी १२ बोर की बंदूक छीन ली।

डाकू सरगना बेबस हुआ। शेष गांव वाले हिम्मत हार रहे बाकी डाकुओं को दबोचने लगे। सारी नगदी व आभूषण वापस मिल गए।

धनपत सिंह का साहस उन्हें अशोकचक्र का सम्मान दिला गया।

समाचार

अनुपमा अनुश्री पुरस्कृत

भोपाल। प्रतिष्ठित बाल संस्था 'बाल कल्याण एवं बाल साहित्य शोध केन्द्र, भोपाल' द्वारा स्थापना दिवस के अवसर पर अनुपमा श्रीवास्तव अनुश्री, भोपाल की काव्य कृति 'अवि तुम्हारे लिए' को कृति सम्मान से अलंकृत किया गया। अनुपमा अनुश्री को शॉल, श्रीफल, स्मृति चिन्ह, पुष्पगुच्छ, प्रशस्ति पत्र द्वारा भोपाल के राज्य संग्रहालय में भव्य समारोह में सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व अपर सचिव मध्य प्रदेश शासन एवं वरिष्ठ साहित्यकार श्री मनोज श्रीवास्तव ने की वहीं मुख्य अतिथि बाल अधिकार संरक्षण आयोग के अध्यक्ष दर्विंद्र मोरे रहे।

विशिष्ट अतिथि कथाकार श्री मुकेश वर्मा और श्री महेश सक्सेना निदेशक, बाल कल्याण एवं बाल साहित्य शोध केन्द्र की गरिमामय उपस्थिति रही।

सुप्रसिद्ध साहित्यकार, कवयित्री, रेडियो-टीवी एंकर, समाजसेवी अनुपमा अनुश्री द्वारा बाल काव्य संकलन की रचना अपने पुत्र 'अवि' को माध्यम बनाकर आज के सभी नन्हे-मुन्ने के लिए की गई है, इसमें विविधरंगी, रोचक, प्रेरक और ज्ञानवर्धक कविताएँ हैं। अनुपमा अनुश्री ने मॉरीशस में अध्ययन किया है और वहीं इस बाल काव्य संकलन का आधार तैयार हुआ। पूर्व में भी इस बाल काव्य संकलन को महत्वपूर्ण सम्मान से सम्मानित किया गया है। साहित्यकारों ने उन्हें बधाइयाँ प्रेषित की हैं।

शिशु गीत

राकेट उड़ा

– डॉ. जयप्रकाश भारती

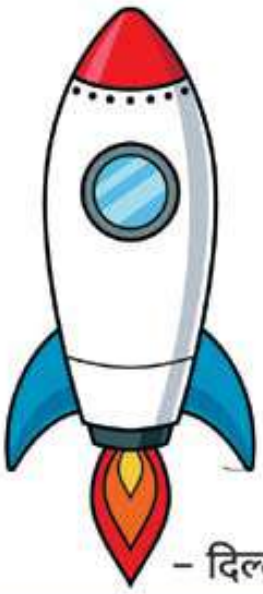

राकेट उड़ा हवा में एक
लाखों लोग रहे थे देख।
पहले खूब लगे चक्कर
हुआ अचानक छू–मंतर।
जा पहुँचा चंदा के पास
जहाँ न पानी, जहाँ न घास।
उल्टे पाँव लौट आया
साथ धूल मिट्टी लाया।

– दिल्ली

देवपुत्र (नव. २०२२) का अंक प्राप्त हुआ। डॉ. फहीम अहमद की बाल कविता 'पंख अगर उग आएँ' ने सबसे पहले ही पत्रिका में स्थान पाकर हम पाठकों को शुरू में ही पत्रिका से बाँध दिया। कुछ यों बांधा कि कल्पना को असीम विस्तार मिला। 'अपनी बात' के अंतर्गत बालदिवस पर बालकृष्ण का स्मरण करते हुए बच्चों को आनंद मनाने के साथ–साथ अपने आस–पास से जुड़े परिवेश के प्रति कर्त्तव्यों को लेकर जागरूक रहने का विचार, सच में, सुंदर है। इस दृष्टि से सनत कुमार की कहानी 'मेघना ने बुलाई एम्बुलेंस' और एक बच्चे ने फोटान रॉकेट बनाने के प्रयास की बात करती राजीव सक्सेना की कहानी 'असफलता' बाल–गोपालों को राह दिखाने में सहायक है। मजे–मजे में सीडबॉल बनाना सिखाती 'माटी के लड्डू' और फल की खोज–यात्रा पर निकले बच्चों की कहानी 'काफल' परिस्थितिकीय विषयों पर अच्छी कहानियाँ हैं। जानवरों और सब्जियों वाली भी मूल्यवान संदेश देती मजेदार कहानियाँ रहीं। चित्रकथा, कविता, स्तंभ, बौद्धिक क्रीडा और प्रसंग के अंतर्गत आई अन्य रचनाएँ भी बाल पाठकों के लिए रुचिकर और पठनीय रही हैं। सुन्दर अंक के लिए आभार।

– डॉ. वेदमित्र शुक्ल, नई दिल्ली

देवपुत्र मेरी अलबेली।
हम बच्चों की सखी–सहेली।।
देश प्रेम उपजाने वाली,
हिन्दी–ज्ञान बढ़ाने वाली।
हमें सुनाती कथा–कहानी,
जो पहले कहती थीं नानी।
नया ज्ञान ये भर कर लाती,
नवाचार को ये उकसाती।
हर एक माह नया कुछ लाती,
लिखने को प्रेरित कर जाती।
तथ्य जो इसमें छप कर आते,
हम बच्चों को बहुत सुहाते।
मन को छूते तथ्य हैं लाते,
संपादक जो हमें बताते।
सुन्दर चित्र कथाएँ इसमें,
बाल पहेली की भी किस्में।
शिशु गीतों का इसमें कोना,
पढ़ कर आता है खुश होना।
मन को ये मंदिर कर जाती,
देवपुत्र जब भी घर आती।

– वसीम अहमद नगरामी, लखनऊ

किशोर के गले में खाना अटका

– डॉ. मनोहर भण्डारी

हर वर्ष होली के दूसरे दिन गांव में सहभोज होता था। हमेशा की तरह आज भी सहभोज था। कुछ लोग खाना खा रहे थे।

हँसी मजाक चल रहा था।

इतने में मोहन के बड़े भाई किशोर के गले में भोजन का कोई टुकड़ा अटक गया। उसका दम घुटने लगा। लोग घबरा गये।

तभी रामू ने उसे खड़ा कर लिया। और उसके पीछे खड़ा हो गया। उसकी कमर में अपनी दोनों बाहें डाल ली। उसके पेट पर (छाती से नीचे) दोनों हाथों को एक–दूसरे में फंसा कर मुठ्ठी बांध ली।

किशोर को थोड़ा आगे झुका दिया। एक झटके के साथ उसके पेट को ऊपर की ओर दबाया। इससे उसके फेफड़े की हवा बाहर निकली पर गले में अटकी चीज नहीं निकली।

उसने फिर से एक–दो बार झटके दिये। चौथी बार में खाने का टुकड़ा हवा के साथ बाहर आ गया। सब लोगों की जान में जान आ गई।

गांव के एक बूढ़े आदमी सुदामा ने किशोर से पूछा– ''बेटे! तुझे क्या हो गया था?''

किशोर ने बताया में खाना खा रहा था। उतने में कोई हँसी की बात हुई। मुँह का कौर गले में फंस गया। कौर फंसते ही ऐसा लगा कि मेरी जान निकल जाएगी।

सुदामा जी ने पूछा– ''बेटा! अब कैसा लग रहा है?''

किशोर बोला– ''अब तो मुझे ठीक लग रहा है।''

सुदामा जी के पूछने पर रामू ने बताया कि यदि चार मिनिट तक टुकड़ा गले में अटका रह जाए, तो आदमी मर भी सकता है?

गोपालपुरा से आये एक मेहमान घासीराम ने पूछा– यदि छोटे बालक के गले में और कुछ फँस जाए, तब भी क्या ऐसा ही करना चाहिए?

रामू ने कहा– ''नहीं, उसे टखने से पकड़कर उल्टा लटका दें। उसका मुँह खोलकर जीभ बाहर निकाले। और चीजों को गिरने दें।''

रामू ने आगे बताया कि– ''यदि आदमी मोटा हो तो उसे पीठ के बल जमीन पर लिटा दें। उसके घुटनों के अलग–बगल घुटनों के बल बैठ जाएँ।

दोनों हाथों को नाभि के ऊपर रखें। उसका सिर एक तरफ झुका दें। फिर अपने दोनों हाथों को ऊपर की ओर एक झटका दें।

जीभ को रूमाल या साफ कपड़े से पकड़कर बाहर खीच लें। ऐसा करने से अटकी हुई चीज निकल जाती है।''

घासीदास जी ने जानना चाहा– ''क्या वह चीज निकलने के बाद आदमी बिल्कुल ठीक हो जाता है?''

रामू ने कहा– ''हाँ, पूरी तरह ठीक हो जाता

है। पर कभी-कभी उसे सांस लेने में कठिनाई होती है। ऐसे समय उसे मुँह से नकली सांस देना चाहिए।''

रामू ने कहा- ''जिस आदमी को नकली सांस देना है। उसको पीठ के बल लिटा दो। तुम उसके सिर की ओर बैठ जाओ। उसके सिर को पीछे की ओर मोड़ दो। उसका मुँह खोल दो।

अंगुलियों से उसकी नाक बंद कर दो। अपना मुँह उसके मुँह पर रख दो। फिर पूरी ताकत से उसके मुँह में फूँक मारो। इससे उसका सीना फूल जाएगा।''

घासीदास ने पूछा- ''उसके बाद क्या करना चाहिए?''

रामू ने कहा- ''अपना मुँह थोड़ी देर के लिए हटा दो। जिससे भीतर की हवा बाहर निकल जाए। फिर मुँह पर मुँह रखकर फूंक मारो।

ऐसा एक मिनिट में १५ से १७ बार दोहराना चाहिए। छोटे बालकों के मामले में एक मिनिट में बीस से पच्चीस बार करना चाहिए।''

घासीदास ने पूछा- ''ऐसा कब तक करना चाहिए?''

रामू ने बताया- ''जब तक आदमी अपने आप सांस न लेने लगे। इसमें एक घंटे का समय भी लग सकता है। इस तरह मुँह से सांस देने को नकली सांस देना कहते हैं।''

घासीदास जी ने पूछा- ''क्या उसे डॉक्टर को भी दिखाना चाहिए?''

रामू ने कहा- ''डॉक्टर को एक बार दिखा देना ठीक रहता है।''

कविता

जमुहाई

- भगवती प्रसाद द्विवेदी

जब निंदिया रानी चुपके से
आँखों को झपकाती,
बार-बार तब मुँह खुल जाता
जमुहाई आ जाती।

लंबी-चौड़ी भाषण बाजी
हमें बोर कर जाती,
धीरज तब जवाब दे जाता
और उबासी आती।

जब हम गिटपिट बातें करते
माँ लेती जमुहाई,
लेते हुए उबासी, उठकर
चल देती हैं ताई।

दादाजी मुँह बड़ा सा
लें लंबी जमुहाई,
लगता मानो 'खुल जा सिम-सिम'
लेता हो अंगड़ाई।

- पटना (बिहार)

चंद्रलोक की थुलथुल परी

– डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

चंद्रलोक में रहती थी एक नन्हीं परी। वह थी तो छोटी–सी, मगर थी बहुत मोटी। बहुत ही मोटी। हाँ, अपनी माँ से भी अधिक। चंद्रलोक में तो सारी परियाँ दुबली–पतली थीं। सब लगभग एक जैसी। किसी का भी वजन पच्चीस किलो से अधिक नहीं था लेकिन उसका वजन तो दिन पर दिन बढ़ता ही जा रहा था। बढ़ते–बढ़ते उसका वजन एक दिन लगभग पचास किलो हो गया। सब उसे थुलथुल कहने लगे। धीरे–धीरे उसका नाम ही थुलथुल पड़ गया।

बेचारी थुलथुल।

उसने खाना–पीना कम कर दिया लेकिन वजन तो कम होने का नाम ही नहीं ले रहा था।

थुलथुल जब चंद्रलोक के अन्य बच्चों को देखती तो उदास हो जाती है। सब कहते कि धरती पर जाओ। वहाँ बहुत अच्छे–अच्छे डॉक्टर हैं। बड़ी से बड़ी बीमारियों का उपचार कर देते हैं।

थुलथुल अपनी माँ से कहती– ''चलो न धरती पर। मुझे डॉक्टर को दिखाओ।''

माँ हँस देतीं– ''अरे! क्यों परवाह करती है? मेरी बिटिया, जैसी भी है, ठीक है।''

''हूँ।'' थुलथुल रूठ जाती– ''कोई बच्चा इतना मोटा नहीं। मुझे ले चलो, नहीं तो मैं किसी दिन स्वयं चली जाऊँगी।''

माँ कह देतीं– ''अच्छा ठीक है। किसी दिन चलेंगे।'' फिलहाल वह दिन तो नहीं आया। एक दिन थुलथुल ही चुपके से धरती के लिए उड़ निकली।

उड़ते–उड़े वह धरती पर जा पहुँची। वहाँ उसे एक डॉक्टर की दुकान दिखाई दी तो फूली न समाई। झट से पहुँची उनके पास। उसे देखकर वहाँ बैठे लोग हँस पड़े। डॉक्टर ने सबको झिड़का। थुलथुल मचलकर बोली– ''डॉक्टर साहब! मेरे मोटापे का उपचार कर दीजिए। बढ़ते–बढ़ते मेरा वजन पचास किलो हो गया है।''

डॉक्टर के पास वजन तौलने वाली मशीन थी। उसे तौला तो चौंककर बोले– ''किसने कहा कि तुम पसाच किलो की हो? तुम्हारा वजन तो तीन सौ किलो है।''

''कहीं आपकी मशीन खराब तो नहीं?'' थुलथुल तो डर ही गई। मगर मशीन तो एकदम ठीक थी। बाप रे, उसका वजन तो छः गुना बढ़ गया था। वहाँ बैठे सब लोग हँस रहे थे। थुलथुल को बुरा लगा। डॉक्टर साहब ने उसे कुछ दवाएँ दीं। कहा– ''इन्हें खाती रहो। वजन कम होता जाए तो दवा भी कम करती जाना। और हाँ.... मेंहनत खूब करो। घूमो–फिरो भी खूब।''

थुलथुल ने डॉक्टर साहब से कहा– ''डॉक्टर सा.! ये वजन तौलने वाली मशीन मुझे दे देंगे?'' मैं

बाद में वापस पर दूँगी।''

डॉक्टर साहब उसे देखकर मुस्कुरा दिए। कहा– ''मेरे पास एक और मशीन है। उसे ले जाओ। वापस नहीं करना इससे जब चाहो अपना वजन तौलती रहना।''

थुलथुल कुछ दिन धरती पर रही। समय से दवा भी खाई। किन्तु वजन तो जस का तस था।

थुलथुल को लगा कि धरती पर उसका उपचार नहीं है। उसका वजन यहाँ आकर और अधिक बढ़ गया है। वह वापस चंद्रलोक के लिए उड़ चली।

न जाने क्या हुआ? बेचारी थुलथुल रास्ता भूल गई। जाना था चंद्रलोक, जा पहुँची मंगल ग्रह पर। एकदम लाल। एक ऊँचा पहाड़ भी उसे दिखा। ज्वालामुखी, रेगिस्तान और गहरी खाइयों से थुलथुल को डर लगा, यह मैं कहाँ आ गई? हाँ, उसे अपना वजन अवश्य कम लगा। थुलथुल का शरीर एकदम हलका हो गया था। उसने झट से अपना वजन

तौला। धन्यवाद भगवान। अब ११३ किलो था। वाह! वह चहक उठी। पता नहीं दवा का असर हुआ या इतना भटकने का। चलो, कुछ राहत तो हुई। काश! अब इसी तेजी से उसका वजन घटता रहे।

उसने फिर उड़ान भरी।

उड़ते–उड़ते वह बृहस्पति (ज्यूपिटर) ग्रह जा पहुँची। यह बहुत बड़ा था। थुलथुल बहुत थक गई थी। उससे उड़ा भी न जा रहा था और अब लगता था जैसे वजन फिर बढ़ रहा है। थुलथुल बैठ गई। उसने एक बार फिर मशीन से स्वयं को तौला। उफ्, ये हो क्या रहा है? वजन तो कहाँ से कहाँ पहुँच गया था। उफ्! लगभग ७१० किलो।

थुलथुल रोने लगी।

उसे भूख भी लग रही थी। वहाँ तो कुछ था भी नहीं। वह फिर उड़ी। एक नए ग्रह पर पहुँची। वह पीला था जैसे पका आम। यह शनिलोक (सेटर) था। यहाँ थुलथुल को लगा कि जैसे उसका शरीर कुछ हलका हो गया है। उसने जल्दी से अपना वजन किया। उसके चेहरे पर तसल्ली के भाव उभरे। चलो, वजन बढ़ा तो नहीं। इस बार उसका वजन २७५ किलो के आसपास था।

थुलथुल को अपने घर की याद आ रही थी। चंद्रलोक न जाने कहाँ गुम हो गया था। मगर उसे हार तो माननी ही न थी। वह फिर उड़ चली। उड़ती गई। उड़ती गई। उसे दूर एक लुढ़कता हुआ गोला दिखाई दिया। यह अरुण (यूरेनस) था। बहुत ठंडा। वह काँप उठी। थककर चूर हो रही थी। बेचारी मशीन पर बैठकर ही सुस्ताने लगी। एक बारगी उसकी नजर जब मशीन पर पड़ी तो दिल खुश हुआ। चलो, अब वह २६६ किलो की ही है। वह खुशी से झूम उठी लेकिन असली खुशी तो तब न कि जब चंद्रलोक मिल जाए। उस ग्रह पर कोई दिखा भी नहीं। उसे डर लगा बस, फिर उड़ चली।

चंद्रलोक! कहाँ गया उसका चंद्रलोक?

यह हो क्या रहा है? अब उसको अपना चंद्रलोक मिलेगा भी या.... ? लेकिन थुलथुल ने मन को संभाला। उसे अपनी माँ या आई। माँ कहती हैं, कभी भी हिम्मत नहीं आरनी चाहिए। मन में हौंसला हो तो रास्ते स्वयं मिल जाते हैं। लेकिन उसका चंद्रलोक? चलो, एक बार फिर खोजते हैं।

अब वह उड़ते-उड़ते वरुण (नेपच्यून) ग्रह पहुँची। वहां तेज आँधियाँ चल रही थी। उसे अपना वजन और अधिक बढ़ा हुआ लग रहा था। वजन तौला। बाप रे... यह लगभग ३३७ किलो हो गया था। उसे रोना आया। निकले थे वजन घटाने को और यह तो कहानी ही उलटी हो गई। चंद्रलोक में अब सब उसे देखकर कितना चौंकेंगे। पर चंद्रलोक मिले तो...

वह लगातार उड़ रही थी। उसे एक गोल चट्टान जैसा ग्रह दिखा। यह बुध (मर्करी) ग्रह था, वहाँ तो जैसे चमत्कार ही हो गया। उसका वजन बस ११३ किलो। फिर भी वजन घटने की अधिक खुशी उसे न थी। उसे तो एक ही चिंता सता रही थी। वह चंद्रलोक कब पहुँचेगी? थकान भी बढ़ती जा रही थी। वह तुरंत ही भाग ली।

थुलथुल सोच रही थी कि कितने सारे ग्रह हैं। पर अपना घर तो अपना ही घर है न। घर से दूर रहकर कितना बुरा लगता है।

अब तो मिल जाओ चंद्रलोक।

अचानक थुलथुल की आँखें चौंधिया गईं। एक चमकीला ग्रह दिखा। यह शुक्र (वीनस) था। यहाँ बहुत गरमी थी। थुलथुल का सिर भारी हो रहा था। हाँ, शरीर भी। उसने मशीन से एक बार फिर वजन किया। अब उसका वजन २७२ किलो था। पर अब उसे अपने वजन को लेकर कोई चिंता न हुई। बस... थुलथुल बार-बार सोचती। उसका चंद्रलोक मिल क्यों नहीं रहा? वह फिर उड़ी उड़ती गई। उड़ती गई। उड़ती गई।

वाह! मिल ही गया उसका अपना ग्रह। चंद्रलोक। वाह! वाह! उसका अपना घर। वाह! घर के सारे लोग। उसे देखकर सबके मुखड़े एकदम खिल उठे। सब कब से उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। सब चहक उठे। थुलथुल भी बहुत खुश थी। बहुत खुश। मारे खुशी के वह रो पड़ी। रोते-रोते सारी कहानी सुना दी।

दीदी हँसी- ''चलो, इस बहाने तुम सारे ग्रहों की सैर तो कर आईं। बताकर जातीं तो हम सब भी साथ चलते।''

छोटी बहन ने छेड़ा-''सारे ग्रह कहाँ? सूर्य लोक तो रह ही गया।''

थुलथुल ने गुस्से में आँखें बड़ी कर दीं, फिर थोड़ा रुककर सहमी-सी बोली- ''माँ! रास्ता भूल जाने के चक्कर में मेरी तो हालत पतली थी। मैंने सैर कहाँ की? बस... हर जगह से सर पर पैर रखकर भागती रही। और... देखो न... वजन कम करने के चक्कर में उलटे अब मैं २७२ किलो की होकर आई हूँ।''

माँ हँस पड़ीं- ''लेकिन मुझे तो तुझमें कोई फर्क नहीं लग रहा।''

''देखो, ये देखो!'' थुलथुल ने मशीन पर खड़े होकर उन्हें अपना वजन दिखाना चाहा। पर.. यह क्या?

अरे... ये...!!! ये तो वजन उतना ही था। हाँ, जितना पहले हुआ करता था। वही, बस ५० किलो ही। सारी बात जानकर माँ जोर से हँस पड़ीं- ''पगली! क्या तुझे नहीं पता कि हर ग्रह पर उसके अनुपात में वजन भी बदल जाता है।''

''हूँ! तो ये बात है!'' थुलथुल परी ने अपने होठ बाहर कर दिए।

''हाँ, बिलकुल यही बात है। चल... भूखी होगी। मैंने तेरे लिए मालपुए बनाएं हैं।''

''अरे वाह!'' और थुलथुल सबके साथ अंदर चल दी।

- शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

प्रसंग–२७ फरवरी बलिदान दिवस

युवा आजाद की ईमानदारी

– सांवलाराम नामा

आजादी के दीवानों में एक नाम क्रांतिकारियों के सिरमौर चन्द्रशेखर आजाद का भी आता है। क्रांतिकारियों का हाल ऐसा था कि खाने को कुछ मिल गया तो खा लिया और न मिला तो पानी ही पीकर काम चला लिया। बस एक ही स्वप्न रात–दिन आँखों में पलता रहता था कि–

''भारत माता' को शीघ्र से शीघ्र स्वतंत्र कराना है।'' यही सपना आजाद भी अपने मन–मस्तिष्क में पाले हुए थे। क्रांतिकारी गतिविधियों में सदैव व्यस्त रहने वाले आजाद उन दिनों झाँसी में वेश बदलकर मोटर गाड़ी चलाना सीख रहे थे।

एक दिन जब वे गाड़ी चलाकर वापस लौट रहे थे तो चने खाने के लिए उन्होंने अपने कुर्ते की जेब टटोली वे दिनभर के भूखे थे, पर कुर्ते की जेब में केवल एक इकन्नी मिली। वे उस इकन्नी के ही भुने हुए चने ले आये। जैसे ही उन्होंने चने खाना शुरू किया तो चने की पुड़िया में से इकन्नी और मिली। वे सोचने लगे इस इकन्नी से कल का काम चल जाएगा। किन्तु तभी मन में विचार आया कि यह इकन्नी मेरी कैसे हो सकती है?

चने खाकर पानी पीकर चन्द्रशेखर पुन: चने वाले की दुकान पर गए और बोले– ''क्यों भाई! तुमने मुझे एक आने के चने दिए और साथ में एक इकन्नी भी दे दी। इस प्रकार से दुकानदारी करोगे तो क्या कमाओगे? ऐसे तो तुम्हें लाभ न होकर नुकसान हो जायेगा।''

चने वाले को इकन्नी लौटाते हुए चन्द्रशेखर आजाद ने अपनी राह ली।

दुकान वाला चन्द्रशेखर आजाद की ईमानदारी से बड़ा ही प्रभावित हुआ। वह उस इकन्नी की ओर देखता तो कभी सड़क पर जाते हुए उस युवा ईमानदार व्यक्ति को।

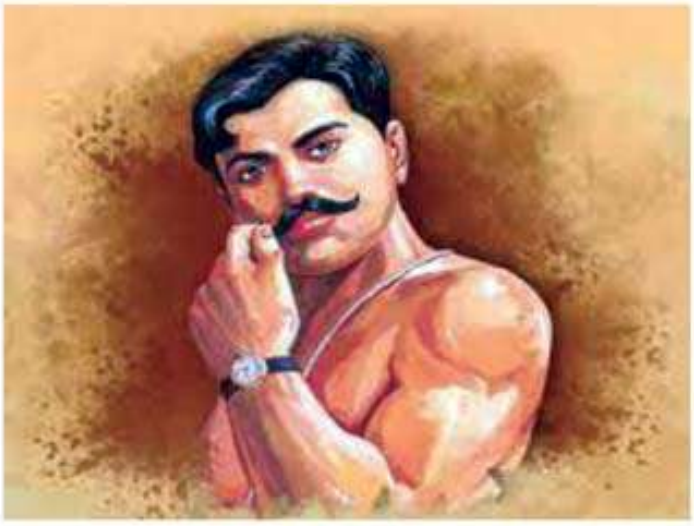

ऐसे खरा सोना थे हमारे क्रांतिकारी युवागण। धन्य, धन्य हो उनके माता–पिता। ऐसे भारत माता को अपने क्रांतिकारी युवाओं पर गर्व है।

– भीनमाल, जालौर (राजस्थान)

☺☺ छ: अँगुल मुस्कान ☺☺

दो दोस्त कार से जा रहे थे। चालक दोस्त ने पूछा– कार की ब्रेक फेल हो जाय तो?

दूसरा दोस्त– गाड़ी की स्पीड बढ़ा लेनी चाहिए ताकि दुर्घटना होने से पहले घर पहुँच जायें।

*****

एक कंजूस अपने बच्चे के पुस्तकों के पन्ने को जल्दी–जल्दी फाड़ रहा था। तभी उसका एक मित्र वहाँ पहुँचा, उससे पूछा ये क्या कर रहे हो?

कंजूस–गोंद की बोतल टूट गयी है। वह बर्बाद न हो जाये उससे ये पुस्तकों के पन्ने चिपका दूँगा।

*****

डॉक्टर के यहाँ प्लंबर ने पानी का पाइप बदलने के ५०० रुपये मांगे।

डॉक्टर– इतना तो एक रोगी से मैं भी नहीं फीस लेता हूँ।

प्लंबर– मैं भी डॉक्टरी में नहीं कमा पाता था। तभी तो मैंने डॉक्टरी छोड़ प्लंबर का काम शुरू कर दिया।

नंदू और चिड़िया

चित्रकथा : देवांशु वत्स

.....पर उनके सहयोगी करीम को नींद नहीं आई...........
अगर मशीन गायब कर दूं तो मैं मालामाल हो जाऊंगा........
कुछ ही देर में वह प्रयोगशाला में था....
.......पर पहले प्रोफेसर को खत्म करना होगा.....
तभी उसकी नजर शीशे के फ्रेम में लगी प्रो. की तस्वीर पर पड़ी...
प्रोफेसर की तस्वीर ! क्यों न एक प्रयोग यहीं हो जाए....
उसने मशीन और तस्वीर के बीच दूरी सेट की.........
अब यह बटन दबा दूं.....
पर बटन दबाते ही मशीन में विस्फोट हुआ....
धड़ाम
मुझे तो लगता है प्रोफेसर ने मशीन में कोई गड़बड़ी कर दी थी जो करीम की मौत का कारण बनी......
नहीं चिड़िया रानी, मुझे लगता है.....मशीन से निकली किरणें तस्वीर के फ्रेम के शीशे से टकरा कर वापस आ मशीन से टकराई होंगी, जिससे मशीन में विस्फोट हुआ होगा......
तुमने ठीक कहा नंदू ! करीम की मौत का कारण शीशे से टकरा कर वापस आई...
किरणें ही थीं ! पर तुमने अपना वादा तोड़ दिया ! मैं चली....
....पर मैं हार नहीं मानूंगा !

श्री अष्ठाना जी का सरस्वती बाल कल्याण न्यास द्वारा अभिनंदन

इन्दौर। देवपुत्र के प्रधान सम्पादक श्री कृष्ण कुमार जी अष्ठाना, सहस्रचंद्र दर्शन समारोह के उपलक्ष्य में विद्याभारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान के राष्ट्रीय सहसंगठन मंत्री श्री श्रीराम जी आरावकर, विद्याभारती मालवा के संगठन मंत्री श्री अखिलेश जी मिश्रा, प्रांतीय अध्यक्ष डॉ. कमलकिशोर चितलांग्या, प्रांतीय सहसचिव सीए श्री राकेश भावसार ने सरस्वती बाल कल्याण न्यास की ओर से श्री अष्ठाना का भावभीना अभिनंदन किया। इस अवसर पर संस्कृति बोध परियोजना के क्षेत्रीय प्रमुख श्री अम्बिकादत्त जी कुंडल तथा प्रांत प्रमुख श्री पंकज जी पंवार, देवपुत्र कार्यालय परिवार के सभी सदस्य भी उपस्थित थे।

शुभकामना संदेश

आदरणीय भाई साहब!

सादर प्रणाम।

आपके सहस्र चन्द्र दर्शन के उत्सव के सुअवसर पर अशेष बधाइयाँ।

प्रभु से प्रार्थना है कि आप सम्पूर्ण शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य का सुख प्राप्त करते हुए शतायु हों और हम सब कार्यकर्ताओं का सदैव मार्गदर्शन करते रहें। मुझ जैसे अनेक कार्यकर्त्ता जिन्होंने संगठन में आपकी अँगुली पकड़कर चलना सीखा आपकी कृपा दृष्टि की लम्बे समय तक अभिलाषा रखते हैं।

विद्या भारती परिवार की ओर से मन:पूर्वक बधाइयाँ और शुभकामनाएँ।

– अवनीश भटनागर,
अखिल भा. महामंत्री,
विद्याभारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान

शुभकामना संदेश

परम आदरणीय कृष्ण कुमार जी अष्ठाना!

सादर प्रणाम।

बड़े ही प्रसन्नता का विषय है कि हमारे प्रेरणा स्रोत श्रद्धेय कृष्ण कुमार अष्ठाना जी का सहस्र चन्द्र दर्शन कार्यक्रम ३० दिसम्बर २०२२ को इन्दौर में सम्पन्न हो रहा है। सरस्वती शिशु मंदिर योजना में प्रारम्भिक काल से ही आपकी महत्वपूर्ण सहभागिता रही है।

आपने विद्याभारती के राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य, 'देवपुत्र' पत्रिका के संपादक व प्रांत और क्षेत्र के सचिव जैसे बड़े दायित्वों का सफलतापूर्वक निर्वहन किया है। इस अवसर पर मैं एवं विद्याभारती मध्यक्षेत्र परिवार, आपके दीर्घायु और स्वस्थ जीवन की कामना करते हैं।

– विवेक शेंडेय,
क्षेत्रीय मंत्री विद्याभारती मध्यक्षेत्र

मुझे संघ व समाज ने बहुत कुछ दिया – श्री अष्ठाना

सहस्र चंद्र दर्शन समारोह के अवसर पर अष्ठाना जी ने कहा मैं इन्दौर में पहले खूब बोलता रहा हूँ, लेकिन आज मुझे कुछ सूझ नहीं रहा है। जब मैं १९५९ में तृतीय वर्ष के लिए जा रहा था, तब एकनाथ रानडे जी ने एक बैठक रखी और कहा तृतीय वर्ष के बाद आप लोग क्या करोंगे? तब मैंने कहा कि ''मैं आजीवन संघ कार्य करूँगा, जो मिलेगा उससे काम चलाऊँगा। जो काम बोलेंगे, वह करूँगा। जहाँ भेजेंगे, वहाँ जाऊँगा। भगवान की कृपा रही, आनंद इस बात का है कि मुझे अपने संकल्पपूर्ति में जीवन खपाने में खूब आनंद आया। मुझे संघ व समाज ने बहुत कुछ दिया है। मेरी पत्नी, परिवार ने मेरा खूब साथ दिया।'' इस अवसर पर श्री अष्ठाना जी ने मीसाबंदी की मिली पेंशन से जमा १ लाख रुपया संघ के सेवा कार्य के लिए देने की घोषणा की।

श्री अष्ठाना जी का कार्यालय परिवार

देवपुत्र कार्यालय परिवार के सर्वश्री रवि मित्तल, गणपति बारस्कर, रामरतन आठिया, विक्रम बोराटे, अम्बिकादत्त कुंडल, कार्तिक परमार, रामभाऊ सोलट एवं गोपाल माहेश्वरी ने प्रधान संपादक श्री कृष्णकुमार अष्ठाना को मानपत्र भेंट।

सार्थक जीवन के धनी कृष्णकुमार अष्ठाना

जीवन दो प्रकार का होता है, एक होता है सफल जीवन। दूसरा होता है सार्थक जीवन। सफलता, परिश्रम, साधनों का सहयोग, अनुकूलता के कालखंड में प्राप्त होती है। लेकिन सार्थक जीवन विकसित कैसे होता है? इसके लिए क्या चाहिए? इसके लिए चाहिए किसी धैर्य के प्रति करने का संकल्प और पुरुषार्थी मन भी चाहिए। सामर्थ्यवान लोग अवसर आने पर दुर्बलता दिखाते हैं, परन्तु निष्ठावान लोग व्यक्तिगत हित को ताक पर रख निर्भयता के साथ धैर्य के प्रति निष्ठा, मन की शक्ति से परिस्थितियों पर मात करते हैं। इसलिए सफल जीवन व सार्थक जीवन भिन्न हैं। अष्ठाना जी का जीवन सार्थक है।

उक्त विचार कृष्णकुमार अष्ठाना जी के सहस्रचंद्र दर्शन कार्यक्रम के अवसर पर पूर्व सरकार्यवाह मा. सुरेश जोशी 'भैया जी' ने मधुर मिलन गार्डन में व्यक्त किए। इस अवसर पर मंच पर क्षेत्र संघचालक अशोक जी सोहनी, महामंडलेश्वर परम पूज्य भास्करानंद जी महाराज, साध्वी कृष्णानंद जी, पू. बाबा साहेब तराणेकर जी, पू. अण्णा महाराज जी, पू. दादू महाराज जी, पू. अमृतफले महाराज जी व वरिष्ठ स्वयंसेवक उपस्थित थे। भैया जी ने कहा कि अष्ठाना जी का अपना व्यक्तित्व, कृतित्व, नेतृत्व है। वे भविष्य में किस बात के लिए जाने जाएंगे, तो वह केंद्र बिंदु है बाल साहित्य का सृजन। बाल साहित्य का सृजन आसान नहीं है, उसके लिए बालक बनना पड़ता है। अष्ठाना जी ने अपनी एक अलग पहचान रखी है। सामाजिक जीवन में पुरस्कार प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करने पड़ते हैं, लेकिन अष्ठाना जी की ओर पुरस्कार स्वयं चलकर आए हैं। समाज की व्यवस्था अलग तरीके से विकसित हुई है। लेकिन अष्ठाना जी का जीवन

अनुकरणीय है। इस जीवन यात्रा में कई उतार-चढ़ाव आए होंगे। कभी दुविधा वाली परिस्थितियाँ, भिन्न-भिन्न विचारों के लोग उनके बीच और उनको लेकर काम करना आसान नहीं है। युवावस्था में संघ में प्रवेश लेकर राष्ट्र की सेवा का मार्ग उसे माना और इस मार्ग पर उनकी यात्रा लगातार चलती ही रही।

भैया जी जोशी ने कहा अष्ठाना जी में एक आत्मविश्वास, प्रतिबद्धता, जूझने की सिद्धता है। ऐसा व्यक्ति समाज जीवन में आदर्श माना जाता है। हम अष्ठाना जी के प्रति जो श्रद्धा का भाव लेकर आए हैं। आज ऐसे व्यक्तित्व का अभाव दिखता है जिनके चरण स्पर्श किए जा सकें। अष्ठाना जी ऐसे ही व्यक्ति हैं जो दिशा एवं प्रेरणा देते हैं। इसके लिए कोई पाठ्यक्रम नहीं होता। यह अनुकरण के रास्ते से आता हैं। ऐसे व्यक्ति के जीवन में आने का सौभाग्य कम मिलता है। अष्ठाना जी का जीवन दूर से व पास से एक जैसा सौंदर्य दिखाई देता है। संघ कार्य की विशेषता है कि मन की शक्ति प्रदान करता है। गौरव का केन्द्र व्यक्तित्व बनना चाहिए। हमारे लिए यह सहस्रचंद्र दर्शन कार्यक्रम जीवन की ओर देखने की शक्ति प्रदान करता है। यह अंत:करण की शक्ति बनाने का कार्यक्रम

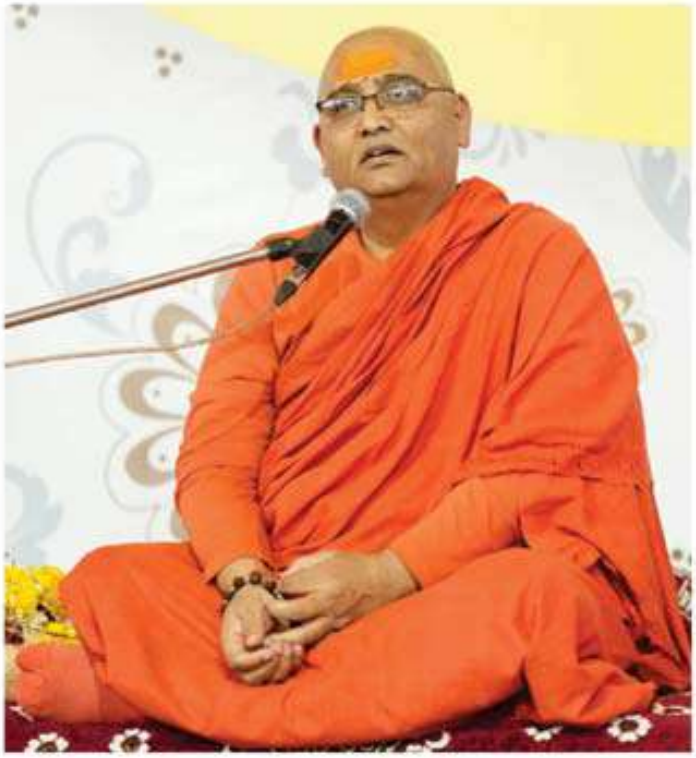

है। अष्ठाना जी का जीवन जैसा चला है, भविष्य में भी ऐसा चले।

इस अवसर पर स्वामी भास्करानंद जी ने कहा कि अष्ठाना जी का जीवन सरल व विनम्र है। आप दीर्घायु हो, आप राष्ट्र सेवा-धर्म सेवा करते रहे, आज जरूरत है राष्ट्र-धर्म के जागरण की। अष्ठाना जी ऐसा कर रहे हैं। अष्ठानाजी के व्यक्तित्व में बालक-सी निर्मलता, युवाओं का जोश व अनुभव की समझदारी

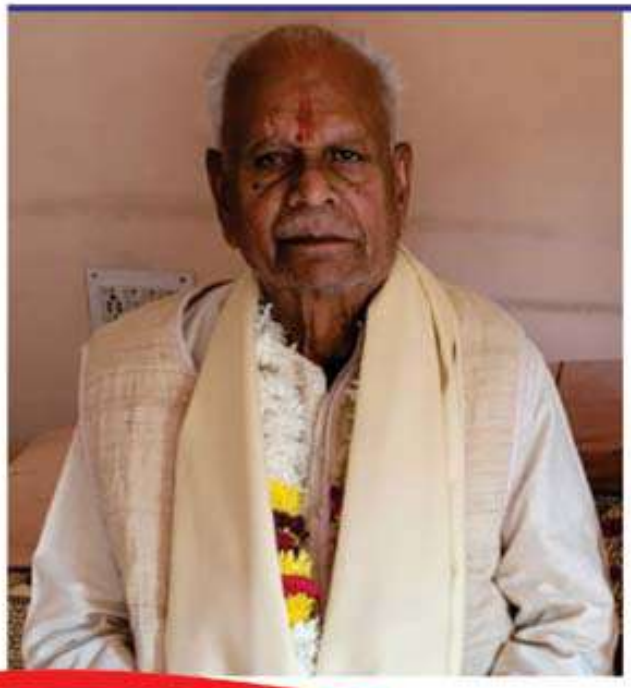

समर्पित भाव सुमन

है राष्ट्र भक्ति के प्रखर सूर्य,
जीवन है जैसे तपश्चर्य।
शिशुओं सा निर्मल निश्छल मन,
अपने भारत के ऐश्वर्य।
कंटकाकीर्ण पथ पर चलकर, सबको सन्मार्ग दिखाते हैं।
महिनों जेलों में रहे किन्तु, बन कमल सदा मुस्काते हैं।
वे लक्ष चंद्र दर्शन पावें, भारत भविष्य के सृजनहार।
करबद्ध प्रार्थना ईश्वर से, उनको शतायु का मिले हार।

– इंदु पाराशर, इन्दौर (म. प्र.)

सूर्या

आत्मनिर्भर भारत की पहचान
लाइटिंग | अप्लायेंसेस
पंखे | स्टील और पीवीसी पाइप

इनोवेशन, क्वॉलिटी और
विश्वसनीयता हमारी पहचान।

सूर्या के प्रोडक्ट केवल पूरे भारत में ही उपलब्ध नहीं बल्कि पूरी दुनिया के 50 से अधिक देशों को निर्यात किए जाते हैं। कम्पनी सभी ग्राहकों की ज़िन्दगी रौशन करने तथा सभी से इनोवेशन, गुणवत्ता और विश्वसनीयता का वादा करती है।

सूर्या रोशनी लिमिटेड
ई–मेलः consumercare@surya.in | www.surya.co.in suryalighting surya_roshni
दूरभाषः +91–11–47108000, 25810093–96 | टोल फ्री नंबरः 1800 102 5657

सुनहरा फूल

– पूर्ति वैभव खरे

राजू हाथी ने श्यामवन जंगल के जानवरों के लिए एक रोचक प्रतियोगिता रखी। दूर जंगल में एक सुनहरा फूल खिला करता था, वो फूल बड़ा सुंदर और कमाल का था।

राजू हाथी ने सभी प्रतियोगियों को प्रतियोगिता के नियम बताते हुएक जमीन पर एक लम्बी रेखा खींचते हुए कहा– ''आप सबको इस निश्चित रेखा से उस सुनहरे फूल तक दौड़ना है, और जो भी उस सुनहरे फूल की महक लेकर सबसे पहले आयेगा उसे इस प्रतियोगिता का विजेता मानकर पुरस्कार दिया जायेगा।''

हिरन, खरगोश, लोमड़ी आदि जानवरों ने प्रतियोगिता में अपना नाम अंकित कराया। प्रतियोगिता शुरू हुई, इस प्रतियोगिता में चींटी ने भी भाग लिया। सभी जानवर चींटी की ओर देखकर हँसने लगे। वे चींटी से बोले– ''चींटी रानी! तुम क्यों भाग ले रही हो? हमारा एक कदम तुम्हारे बीस कदम के बराबर है।''

चींटी उदास होकर बोली– ''माना कि मैं बहुत छोटी हूँ, तो क्या? मेरा इसमें कोई दोष है? हाथी भाई! आप ही बताइए, क्या छोटे होने के कारण मैं प्रतियोगिता से बाहर हो जाऊँ?''

राजू हाथी– ''नहीं, नहीं चींटी रानी! बिलकुल नहीं। तुम भाग लो, क्योंकि हार–जीत से अधिक किसी प्रतियोगिता में भाग लेने का महत्व होता है।''

राजू हाथी ने हरी झंडी दिखाकर दौड़ प्रतियोगिता शुरू की। सभी खूब तेज दौड़े, सब जल्द से जल्द सुनहरे फूल की महक ले वापस आना चाहते थे।

यहाँ इस प्रतियोगिता के बारे में शेरों के झुण्ड को पता चल गया। उन्होंने उस रास्ते को पहले से ही

घेर लिया। शेरों को देखकर सभी जानवर यहाँ–वहाँ भागने लगे। जैसे–तैसे सबने अपनी जान बचाई।

वापस आकर जानवरों ने राजू हाथी को सारी बात बताई। राजू हाथी प्रतियोगिता पूरी न हो पाने से उदास हो गया। वह बोला– ''यह प्रतियोगिता बेकार हो गई, किसी को भी ईनाम की ट्रॉफी नहीं मिल पाई।'' यहाँ सब उदास बैठे थे कि दूर चींटी आती दिखी धीरे–धीरे आती चींटी के चेहरे पर जैसे विजय की मुस्कान थी।

जैसे ही चींटी पास आई सबने उसकी खुशी का राज जानना चाहा। चींटी बड़ी खुश हो बोली– ''हाथी भाई! मैंने प्रतियोगिता पूरी की पर मैं सबसे बाद में आई, शायद सभी जानवर मुझसे पहले ही सुनहरे फूल की खुशबू लेकर आ गए? लेकिन मुझे इसका दु:ख नहीं कि मैं सबसे पीछे रही बल्कि मैं प्रसन्न हूँ क्योंकि मैंने प्रतियोगिता पूरी की।''

राजू हाथी चींटी के बातों से बड़ा प्रसन्न हुआ– वह बोला– ''प्यारी छोटी–सी चींटी रानी! तुम पीछे नहीं आई, बल्कि तुम ही आज की विजेता हो। सारे जानवर शेरों के भय से वापस लौट आये, किन्तु तुमने प्रतियोगिता को पूरा किया इसलिए तुम, विजेता हो।'' सभी जानवर एक स्वर में बोले– ''हम कैसे मान लें कि चींटी सुनहरे फूल की खुशबू लेकर आई है? ऐसा करते किसी ने इसे नहीं देखा इसलिए ये झूठ भी बोल सकती है।'' तब राजू हाथी बोला– ''नहीं! चींटी सब बोल रही है, क्योंकि सुनहरे फूल की खुशबू जो भी लेता है वह खुशबू उसके पास से भी आने लगती है। मैं उस खुशबू को अच्छे से पहचानता हूँ।''

सभी जानवर चींटी के पास से उस खुशबू को महसूस कर पा रहे थे। छोटी सी चींटी रानी को तालियों की गड़गड़ाहट के साथ विजेता की ट्रॉफी दी गई। चींटी आज अपने छोटे होने पर गर्व कर रही थी। क्योंकि अपनी लघुता के कारण ही वह आज शेरों के झुंड से बच पाई थी। यहाँ सभी जानवर भी ये समझ गए थे कि छोटा होना कोई कमजोरी नहीं होती।

कविता

अम्मा तुम भूगोल बताओ

– आशीष मोहन, झिरी (म. प्र.)

अम्मा तुम भूगोल बताओ!
धरती क्यों है गोल बताओ!!
स्वच्छ आसमान मिला है,
सूरज का प्रकाश खिला है।
जगमग–जगमग तारे चमकें,
क्या है इनका मोल बताओ...!
हवा चले है मध्यम–मध्यम,
फूल खिले हैं सुंदर–सुंदर।
जुगनू में प्रकाश कहाँ का,
क्या है इनका झोल बताओ...!
किचन में चौकी–बेलन गोल,
इनसे बनती रोटी गोल।
दीदी कबसे धूम मचाए,
बेलन वाला रोल बताओ...!

विज्ञान व्यंग

-संकेत गोस्वामी

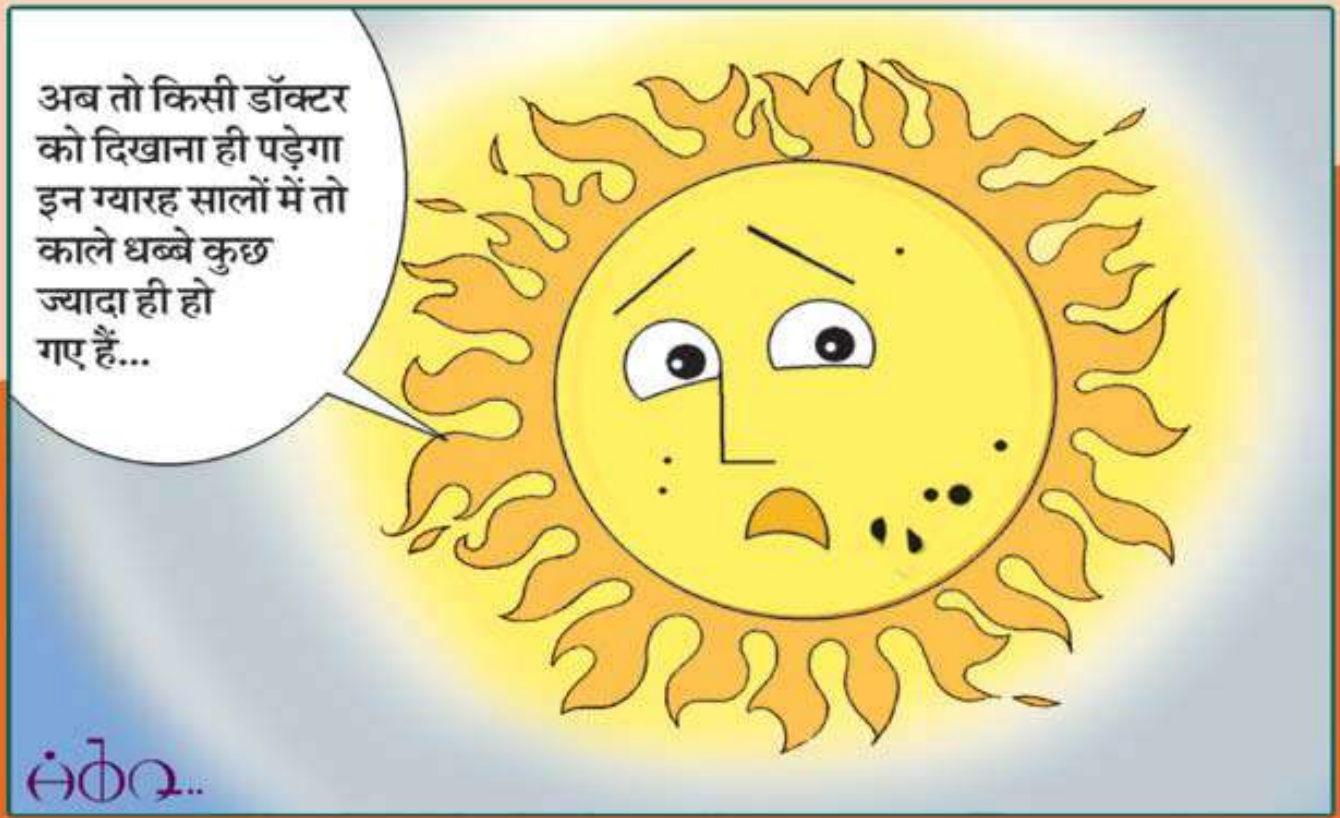

कहानी माचिस की

– दिनेश प्रताप सिंह 'चित्रेश'

माचिस एक ऐसी वस्तु है, जिससे शायद ही कोई अनजान हो, मगर यह बात कम लोग जानते हैं कि इसकी खोज के पीछे एक संयोग की भूमिका थी। इंग्लैण्ड का जॉन वाकर वह व्यक्ति है, जिसे माचिस के आविष्कार का श्रेय प्राप्त है।

वास्तव में जॉन वाकर कोई वैज्ञानिक नहीं था। वह रासायनिक द्रव्यों का एक व्यवसायी था। एक सुबह वह अपनी दुकान की सफाई कर रहा था, तभी उसके हाथ अँगुली जितनी मोटी लकड़ी का एक टुकड़ा आ गया। उसने लकड़ी दुकान के बाहर गली में फेंक दी। गली में एक पत्थर से टकराकर लकड़ी फक्क... फक्क... करके जल उठी।

जॉन वाकर आश्चर्य में डूबा दुकान से बाहर आया। और लकड़ी का वह टुकड़ा उठाकर ध्यान से देखने लगा। तीन–चार दिन पहले उसने एंटीमनी सल्फाइड और पोटैशियम क्लोरेट का घोल इसी लकड़ी से चलाकर मिलाया था, घोल का अंश लकड़ी के सिरे पर सूख गया था जो पत्थर से रगड़ खाकर जल उठा था। यह सब जानने–समझने के बाद जॉन वाकर के मन में आग जलाने का एक सस्ता साधन तैयार करने की कल्पना जाग उठी।

इसके बाद उसने कुछ प्रयोग किये और वर्ष १८२७ में माचिस की डिब्बियाँ बाजार में उतारने में सफल हुआ। इस प्रारम्भिक माचिस की तीलियों के सिरे पर जॉन वाकर गोंद, स्टार्च, एंटीमनी सल्फाइड एवं पोटैशियम क्लोरेट का घोल लगाता था। तीलियों को रगड़कर जलाने के लिए वह माचिस के अंदर रेगमाल का एक छोटा टुकड़ा भी रखता था। वाकर की माचिस बहुत सुविधाजनक तो नहीं थी, लेकिन फिर भी बहुत जल्दी लोकप्रिय होने लगी। ऐसी स्थिति में कुछ अन्य व्यवसायियों ने भी माचिस कम्पनियाँ खोल लीं। इसे अधिक सुविधाजनक, उपयोगी और सुरक्षित रूप देने के प्रयास भी चलते रहे।

इस सिलसिले में वर्ष १८३१ में एक कम्पनी ने ऐसी माचिस बनायी जिसकी तीलियों पर पीला फास्फोरस लगाया गया था। इसमें रेगमाल के स्थान पर स्थान पर तीलियों को रगड़कर जलाने के लिए माचिस की डिब्बी पर ही एक ओर फास्फोरस का घोल लगाया गया था। यह माचिस जलने में आसान थी। किन्तु इसमें एक जबरदस्त दोष भी था। इसकी तीलियाँ रगड़ खाकर कभी–कभी अचानक ही जल उठती थीं। इस माचिस के चलते कई एक दुर्घटनाएँ हुईं थीं। इस कमी को दूर करके के लिए स्वीडन के वैज्ञानिक ई० पाश्च ने वर्ष १८४४ में पीले फास्फोरस के स्थान पर लाल फास्फोरस का उपयोग किया। ई० पाश्च की युक्ति कारगर सिद्ध हुई, धीरे–धीरे माचिस सारे संसार में बिकने लगी।

इसी बीच माचिस भारतीय बाजार में आई। प्रथम विश्वयुद्ध से पूर्व यहाँ डेढ़ करोड़ ग्रुस माचिस के बक्सों का आयात होता था, ऐसे संकेत उपलब्ध हैं। वर्ष १९१६ में ब्रिटिश सरकार ने आयात शुल्क बढ़ाकर साढ़े सात प्रतिशत कर दिया। इससे बचने के लिए विदेशी माचिस कम्पनियों के एजेण्टों ने स्थानीय स्तर पर माचिस तैयार करने की कुछ इकाइयाँ स्थापित कीं। इन्हीं दिनों शिवाकाशी के नाडार बन्धुओं ने कोलकाता जाकर एक माचिस कम्पनी में माचिस बनाने का काम सीखा, फिर वर्ष १९२३ में शिवाकाशी आकर 'महाकलीश्वरी मैच फैक्टरी' की स्थापना करके अपनी स्वदेशी माचिस बाजार में ले आये। वर्ष १९२७–२८ के बीच शिवाकाशी में ही लगभग एक दर्जन भारतीय उद्यमी अपनी फैक्टरियाँ लगा चुके थे। वर्ष १९३० तक भारतीय माचिस उद्योग घरेलू आवश्यकता के साथ–साथ वर्मा की माचिस की माँग भी पूरी करने लगा था। आज माचिस के निर्यातक देशों में भारत का अग्रणी स्थान है।

– सुलतानपुर (उ. प्र.)

रवि लायटू का विस्मयकारी भारत

एलोरा गुफ़ाओं में गुफ़ा 16, जो कैलाश मंदिर के नाम से विख्यात है, को बनाने की टेक्नोलॉजी बहुत ही अद्भुत व अनोखी है।
किसी मंदिर या भवन का निर्माण हमेशा ही ईटों या पत्थरों को एक के ऊपर एक जमाते हुए किया जाता है पर यहां का कैलाश मंदिर, एक पहाड़ को पूरी योजना के के साथ ऊपर से काट-काट कर, नीचे की ओर बढ़ते हुए बनाया गया है।

आज के वैज्ञानिक और शोधकर्ता अनुमान लगाते हैं कि मंदिर बनाने के दौरान करीब 4,00,000 टन पत्थर काट कर हटाया गया होगा। इस हिसाब से अगर 7,000 मजदूर 150 वर्ष तक काम करें तभी यह मंदिर पूरा बन सकता था परन्तु उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर जो परिणाम मिले हैं उनके अनुसार कैलाश मंदिर इससे बहुत ही कम समय यानि महज 17 वर्ष में ही तैयार हो गया था।

एशिया का सबसे स्वच्छ गांव होने का दर्जा जिसे प्राप्त है, वह है मेघालय में शिलॉंग से 90 किमी. दूर स्थित 'गॉड्स ओन गार्डन' कहलाने वाले मावलिनोंग गांव को, जहां के निवासियों का मुख्य पेशा तो कृषि ही है पर आश्चर्य यह कि यहां की साक्षरता दर शत-प्रतिशत है।

'लेडी खली' के नाम से मशहूर कविता देवी दलाल को भारत की पहली डब्लू.डब्लू.एफ. रेस्लर होने का गौरव प्राप्त है। इससे पहले भारोत्तोलन प्रतियोगिता में भी ये 4 बार नेशनल चैंपियन रह चुकी हैं।

ऐसा केवल भारत में हो सकता है ! महंत भरतदास दर्शनदास बापू, जो गुजरात में गिर वन के बानेज में रहते थे, वहां के अकेले और एक मात्र मतदाता थे। फिर भी हर चुनाव में एक संपूर्ण मतदान केंद्र केवल उनके लिए ही स्थापित किया जाता रहा। दुर्भाग्यवश उनका निधन हो जाने से अब इस क्षेत्र का यह मतदाता भी अपना मताधिकार खोकर चला गया।

© gyanhm@gmail.com/ 0 8077554501

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२१-२०२३ | आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०१/२०२३ | प्रेषण तिथि ३०/०१/२०२३ | प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

जुलाई २०२२ के अंक से देवपुत्र का संशोधित मूल्य निम्नानुसार है।

एक अंक ३०/- वार्षिक सदस्यता २००/- १५ वर्षीय सदस्यता २०००/-

एक ही पते पर १० या अधिक अंक एक साथ मँगवाने पर वार्षिक शुल्क १५०/- प्रति अंक

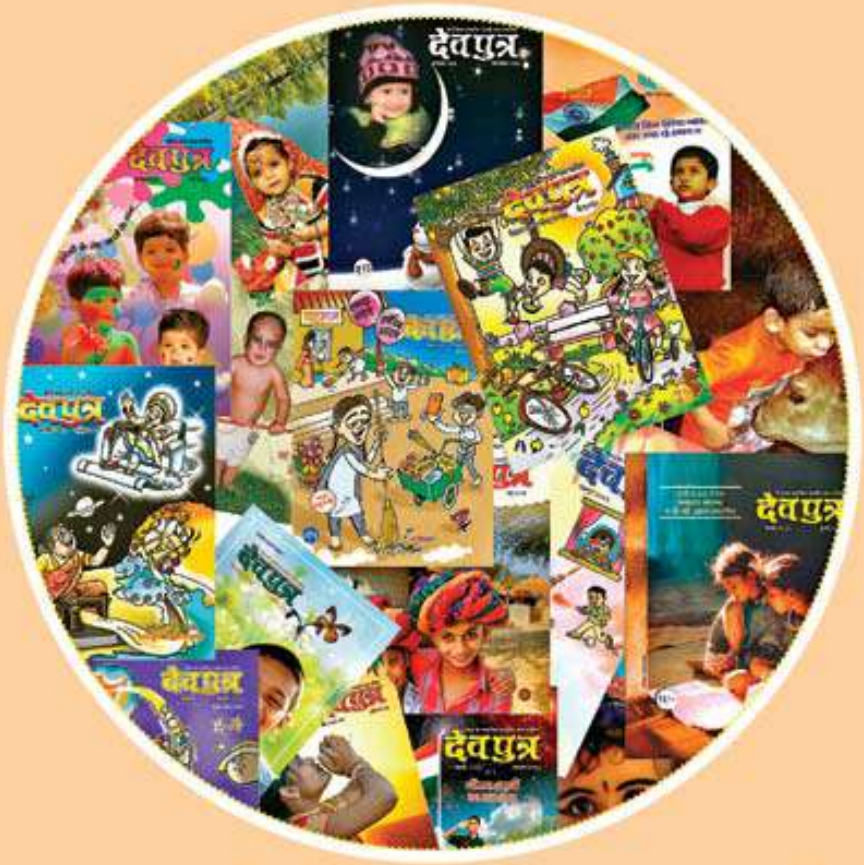

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल

'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अब और आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना